॥ श्रीः ॥

विश्वकर्मविद्याप्रकाशः ।

रोहितकप्रदेशान्तर्गतनेरीग्रामनिवासिगौडवंशाव-
तंसविविधशास्त्रपरमपण्डितश्रीशिवसहायपुत्र-
रविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितया

भाषाटीकया समेतः ।

सोऽयम्

मुम्बय्यां

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

"श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये

त्वा प्रकाशितः ।

शक १८१८, संवत १९५३.

रजिस्टरीहक यन्त्रालयाधीशने स्वाधीन रक्खाहै.

Δ2!864
15C7

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

△2:864 1317
15C7
Ravidatta Shastri
Vishwakarma vidy
...ashah.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

4.70

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI
1317
Δ2:864
15C7

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

रजिस्टरीहक़ यन्त्रालयाधीशने स्वाधीन रक्खाहै.

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Δ2:864
15C7

JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. ~~2157~~
1317

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीः ।

अथ विश्वकर्मविद्याप्रकाशस्यानुक्रमणिका ।

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मंगलाचरणम्	१
गृहस्यावश्यकता	१
वृषवास्तुचक्रम्	१
संक्रांतिपरत्वेनगृहारंभस्यशुभाशुभत्वम्	२
गृहारंभस्यशुभकालः	३
देवालयाद्यारंभेसंक्रांतिपरत्वेन राहुमुखविचारः	३
अधोमुखादिनक्षत्रेषुकार्यकरणविचारः	४
गृहस्यमध्यादिभागेकूपकरणेफलविचारः	५
कूपखननेसूर्यनक्षत्रपरत्वेनउदकविचारः	५
गृहमध्येआग्नेय्यादिक्रमेणषोडशगृहविचारः	६
गृहारंभेलग्नपरत्वेनगृहायुःकथनम्	६
वास्तुपुरुषोत्पत्तिकथनम्	८
राजादीनांगृहेषुविस्तारदैर्घ्यप्रमाणकथनम्	८
विप्रादीनांगृहप्रमाणकथनम्	११
पारशवांबष्ठादीनांगृहप्रमाण कथनम्	१३
गृहस्य सोष्णीषादिनामकथनम्	१४
गृहभित्तिप्रमाणकथनम्	१५
द्वारप्रमाणविचारः	१५
स्तंभप्रमाणकथनम्	१६
द्वारकरणविचारः	१८
अलिंदपरत्वेनगृहनामकथनम्	१८
नामपरत्वेनफलविचारः	१९
गृहस्यैशान्यादिक्रमेणदेवतास्थितिकथनम्	२०
गृहस्यान्तर्गतकोष्ठाधिपतिकथनम्	२१
वास्तुपुरुषस्थितिकथनम्	२२
चतुःषष्टिकोष्ठगृहस्यदेवताकथनम्	२४
गृहमध्येशल्यकथनम्	२४
शल्यपरत्वेनफलविचारः	२५
वास्तुपुरुषस्यमर्मस्थानकथनम्	२६
द्वारपरत्वेनफलविचारः	२८
द्वारवेधेफलविचारः	२९
द्वारस्वरूपकथनम्	३१
गृहसमीपेवृक्षपरत्वेनफलकथनम्	३२
राजगृहसमीपेमंत्रिदेवतादिगृहेषु फलकथनम्	३३
गृहस्यशुभाशुभभूमिकथनम्	३४
ब्राह्मणादिवर्णानांशुभाशुभभूमिकथनम्	३५
गृहकरणात्पूर्वकृतंकर्माणि	३६
गृहमध्येशल्यकथनम्	३७
शिलान्यासस्तंभस्थापनविधिः	४०
पूर्वादिदिक्षुगृहस्यउच्चनीचत्वे फलकथनम्	४१
ऐशान्यादिक्रमेणदेवतादिगृहकरणकथनम्	४१
गृहयोग्यवृक्षकथनम्	४२
वृक्षच्छेदनविधिः	४२
गृहप्रवेशविधिः	४३
गृहप्रवेशकालः	४४
गृहप्रवेशेकलशचक्रम्	४६

इति विश्वकर्मविद्याप्रकाशस्यानुक्रमणिका समाप्ता ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ विश्वकर्मविद्याप्रकाशः ।

भाषाटीकासमेतः ।

श्रीमद्गुरून्नमस्कृत्य विशुद्धानन्दरूपिणः ।
विश्वकर्मप्रकाशोयं रविदत्तेनरच्यते ॥ १ ॥

अब विश्वकर्मविद्याप्रकाश ग्रंथको कहतेहैं—

अर्थ—अब ग्रंथकार निर्विघ्नपूर्वक ग्रंथकी समाप्तिके लिये नमस्कारात्मक मंगल करताहै—विशुद्ध आनंदरूपवाले श्रीयुत गुरुजीको प्रणामकर इस विश्वकर्मप्रकाश ग्रंथको रविदत्त रचताहै ॥ १ ॥

गृहस्थस्य क्रियाः सर्वा न सिध्यंति गृहंविना ।
यतस्तस्माद्गृहारंभसमयः प्रोच्यते बुधैः ॥ २ ॥

अर्थ—जिस कारणसे गृहस्थकी सब क्रिया घरकेविना सिद्ध नहीं होसक्ती उसीकारणसे पंडित घरको बनानेका समय कहतेहैं २

गेहाद्यारंभेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे रामैर्दाहोवेदभैरग्रपादे ॥
शून्यंवेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैःपृष्ठे श्रीर्युगेदक्ष
कुक्षौ ॥ ३ ॥ लाभोरामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो वे-
दैर्नैःस्व्यं वामकुक्षौ मुखस्थैः॥रामैः पीडा संततंवार्क-
धिष्ण्यादश्वैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तंह्यसत्सत् ॥ ४ ॥

अर्थ—अब वृषवास्तुचक्र कहतेहैं घरआदिके आरंभमें जिस नक्षत्रपै सूर्य हो उस्से दिनका नक्षत्रतक गिनै प्रथम तीन

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नक्षत्र वृषके शिरपै होतेहैं उन्होंमें आरंभ हो तो घरमें अग्नि लगै। पीछे चार नक्षत्र वृषके अगले पैरोंपै होतेहै उन्होंमें आरंभ हो तो घर शून्य रहै। पीछे चार नक्षत्र वृषके पिछले पैरोंपै होतेहैं उन्होंमें आरंभ हो तो घर बनानेवालाकी स्थिरता रहतीहै पीछे तीन नक्षत्र वृषके पीठपैं स्थितहैं उन्होंमें आरंभ हो तो लक्ष्मीजीकी प्राप्ति होतीहै। पीछे चार नक्षत्र वृषकी दाहिनी कुक्षिमें स्थितहैं उन्होंमें आरंभ हो तो ॥ ३ ॥ लाभ होताहै पीछे तीन नक्षत्र वृषकी पूंछमें स्थितहैं उन्होंमें आरंभ हो तो घर बनानेवालेका नाश होताहै। पीछे चार नक्षत्र वृषके वामी कुक्षिमें होतेहैं उन्होंमें आरंभ हो तो दरिद्रपना होताहै। पीछे तीन नक्षत्र वृषके मुखमें स्थितहैं उन्होंमें आरंभ हो तो घर बनानेवालेको पीडा होतीहै। जिस नक्षत्रपै सूर्य हो उस्से सात अशुभ ग्यारह शुभ पीछें दश अशुभ ऐसे हैं ॥ ४ ॥

गृहसंस्थापनं सूर्य्ये मेषगे शुभदं भवेत् ॥
वृषस्थे धनवृद्धिः स्यान्मिथुने मरणं ध्रुवम् ॥ ५ ॥
कर्कटे शुभदं प्रोक्तं सिंहे भृत्यविवर्द्धनम् ॥
कन्या रोगं तुला सौख्यं वृश्चिके धनवर्द्धनम् ॥ ६ ॥
कार्मुके च महाहानिर्मकरे स्याद्धनागमः ॥
कुंभेतुरत्नलाभः स्यान्मीने सद्म भयावहम् ॥ ७ ॥

अर्थ—मेषके सूर्यमें घर बनाना शुभ देताहै वृषके सूर्यमें घर बनाना धनको बढाताहै मिथुनके सूर्यमें घर बनाना मृत्युको निश्चय करताहै ॥ ५ ॥ कर्कके सूर्यमें घर बनाना शुभदे-

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताहै सिंहके सूर्यमें घर बनाना नौकरोंको बढाताहै कन्याके सूर्यमें घर बनाना रोगको करताहै तुलाके सूर्यमें घर बनाना सुख करताहै वृश्चिकके सूर्यमें घर बनाना धनको बढाताहै धनके सूर्यमें घर बनाना बहुत हानि करताहै मकरके सूर्यमें घर बनाना धनका आगमन करताहै कुंभके सूर्यमें घर बनाना रत्नोंका लाभ करताहै मीनके सूर्यमें घर बनाना भयको देताहै ७॥

भौमार्करिक्तामाद्यूनेचरोनेगेविपंचके ।
व्यष्टांत्यस्थैःशुभैर्गेहारंभस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ ८ ॥

अर्थ–मंगलवार ऐंतवार चतुर्थी नवमी चतुर्दशी अमावस प्रतिपदा अष्टमी इन्होंसे रहित दिन हो मेष कर्क तुला और मकर इन्होंसे रहित लग्नहो. रोग अग्नि नृप चोर और मृत्यु इन बाणोंसे रहित दिन हो शुभ ग्रह आठमें और बारहमें नहों और पाप ग्रह तीसरा ग्यारहवां और छठास्थानमें हों ऐसा लग्नहोनेमें घरका आरंभ करना शुभ है ॥ ८ ॥

देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शंभु
दिशोविलोमतः ॥ मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे
खातेमुखात्पृष्ठ विदिक्छुभावहेत् ॥ ९ ॥

अर्थ–देवताका मंदिर बनानेमें मीन मेष वृष इन्होंके सूर्य विषे राहुका मुख ईशानमें होता है मिथुन, कर्क, सिंह इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख वायव्यमें होता है कन्या, तुला, वृश्चिक, इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख नैर्ऋत्यमें होता है धन मकर कुंभ इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख आग्नेयीमें होता है घर बनानेविषे

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिंह कन्या तुला इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख ईशानमें होता है वृश्चिक धन मकर इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख वायव्यमें होता है कुंभ मीन मेष इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख नैर्ऋत्यमें होता है वृष मिथुन कर्क इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख आग्नेयीमें होता है जलाशय अर्थात् कूवा बावडी तलाव आदि बनाना हो तो मकर कुंभ मीन इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख ईशानमें होता है मेष वृष मिथुन इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख वायव्यमें होता है कर्क सिंह कन्या इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख नैर्ऋत्यमें होता है तुला वृश्चिक धन इन्होंके सूर्यमें राहुका मुख आग्नेयीमें होता है देवालय आदि इन तीनोंमें भूमि शोधन करना हो जब राहुके मुखसे आक्रांत हुई दिशासे पृष्ठवर्तिनी दिशा शुभ होती है जैसे ईशानमें राहुका मुख हो उसे पृष्ठवर्तिनी आग्नेयीमें प्रथम खातका आरंभ शुभफल देता है इसीप्रकार सब जगह जानना ॥ ९ ॥

अधोमुखैर्भैर्विदधीत खातं शिलास्तथैवोर्द्धमुखैश्च पट्टम् ॥ तिर्य्यङ्मुखैर्द्वारि कपाटमानं गृहप्रवेशो मृदुभिर्ध्रुवर्क्षैः ॥ १० ॥

अर्थ—मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, ये अधोमुख नक्षत्र हैं इन्होंमें खात करना शुभ है आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तीनों उत्तरा रोहिणी ये ऊर्ध्वमुख नक्षत्र है इन्होमें शिला और सरद, रुगादि धरने अनुराधा, मृगशिर, रेवती, चित्रा, हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी, ये तिर्य्यङ्मुख नक्षत्र हैं इन्होंमें द्वारपै कपाट चढाने शुभ है मृगशिर, रेवती,

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी इन्होंमें गृहप्रवेश शुभ है १०

कूपेवास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्य्यवृद्धिः ॥ सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशोमृतिश्च संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम्॥ ११ ॥

अर्थ–घरके मध्यभागमें कूंवा हो तो स्वामीका धन नाशहो ईशानमें कूवा हो तो पुष्टि पूर्वमें हो तो ऐश्वर्य्यकी वृद्धि अग्नीमें हो तो पुत्रनाश दक्षिणमें हो तो स्त्रीनाश नैर्ऋतमें हो तो घरके स्वामीका नाश पश्चिममें हो तो धनप्राप्ति वायव्यमें हो तो शत्रुपीडा उत्तरमें हो तो सुख ये होतेहैं ॥ ११ ॥

कूपेऽर्कभान्मध्यगतैस्त्रिभिर्भैः स्वादूदकं पूर्वदिशि त्रिभिर्भैः ॥ खंडंजलं स्वादुजलं जलक्षयं स्वादूदकं क्षारजलं शिलाजलम् ॥ १२ ॥ क्षारंजलं मृष्टजलं क्रमाद्भवेद्वा सूर्यभात्रित्रिमितैः शुभाशुभम् ॥ १३ ॥

अर्थ–कूवा खोदनेमें जिस नक्षत्रपै सूर्य हो उससे गिनै प्रथम तीन नक्षत्र मध्यमें हैं उन्होंमें खात हो तो स्वादु जल निकसै पीछे तीन नक्षत्र पूर्वमें है उन्होंमे खात हो तो खंडित जल रहै। पीछे तीन नक्षत्र अग्निकोणमें हैं उन्होंमें खात हो तो स्वादु जल निकसै पीछे तीन नक्षत्र दक्षिणमेंहैं उन्हों में खात हो तो जलका क्षयरहै पीछे तीन नक्षत्र नैर्ऋत में हैं उन्होंमें खात हो तो स्वादु जल निकसै पीछे तीन नक्षत्र पश्चिममें है उन्होंमें खात हो तो खारा जल निकसै पीछे तीन नक्षत्र वायव्यमें है उन्होंमें खात हो तो पत्थर सहित जल निकसै पीछे तीन नक्षत्र उत्तरमें हैं उन्होंमें खात हो तो खारा

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जल निकसै पीछे तीन नक्षत्र ईशानमें है उन्होंमें खात हो तो सुंदर जल निकसै सूर्यके नक्षत्रसे तीन तीन शुभाशुभहैं ॥ १३॥

स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजेश्च धान्यभांडार दैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः॥ तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम ॥ १४॥

अर्थ—पूर्वमें स्नानकरनेका घर अग्निकोण में रसोईघर दक्षिणमें शयनघर नैर्ऋतमें शस्त्रघर पश्चिममें भोजनघर वायव्यमें अन्नसंग्रहघर उत्तरमें धनघर अर्थात् खजाना ईशानमें देवमंदिर पूर्व और अग्निकोणके मध्यमें दही बिलोनेका घर अग्नि और दक्षिणके मध्यमें घृतसंग्रहघर दक्षिण और नैर्ऋत्यके मध्यमें पुरीषगृह अर्थात् पखाना और नैर्ऋत्य और पश्चिमके मध्यमें विद्याघर पश्चिम और वायव्यके मध्यमें रोदनघर वायव्य और उत्तरके मध्यमें भोगघर उत्तर और ईशानके मध्यमें औषधघर ईशान और पूर्वके मध्यमें सर्वघर अर्थात् शेष रहे पदार्थोंका घर इस प्रकार १६ घर बनाने॥ १४ ॥

जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु लग्नारिजामित्रसुख त्रिकेषु ॥ स्थितिः शतंस्याच्छरदां सितार्के इज्ये तनुव्यंगसुते शतेद्वे ॥ १५ ॥ लग्नांबरायेषु भृगुज्ञभानुभिः केंद्रेगुरौ वर्षशतायुरालयम् ॥ बंधौ गुरुर्व्योम्नि शशीकुजार्कजौ लाभे तदाशीतिसमायुरालयम् ॥ १७ ॥ स्वोच्चे शुक्रे लग्नगेवा गुरौवेश्म

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गतेऽथवा॥शनौ स्वोच्चे लाभगेवा लक्ष्म्यायुक्तं चिरं गृहम् ॥ १८ ॥

अर्थ–लग्नमें बृहस्पति हो छठे सूर्यहो सातमें बुध हो चौथे शुक्रहो तीसरे शनिहो ऐसा लग्नमें आरंभ किया घरकी स्थिति १०० वर्ष पर्य्यंत रहतीहै लग्नमें शुक्र हो तीसरे सूर्य हो छठे मंगल हो पांचमें बृहस्पति हो ऐसा लग्नमें आरंभ किया घरकी स्थिति २०० वर्ष पर्य्यंत रहतीहै ॥ १६ ॥ लग्नमें शुक्र हो दशमें बुध हो ग्यारहवें सूर्य्य हो चौथा सातमां और दशमां इन स्थानोंमें बृहस्पति हो ऐसा लग्नमें आरंभ किया घरकी स्थिति १०० वर्ष पर्य्यंत रहती है चौथे बृहस्पति हो दशमें चंद्रमा हो ग्यारहमें मंगल शनि हों ऐसा लग्नमें आरंभ किया घरकी स्थिति ८० वर्ष पर्य्यंत रहतीहै ॥ १७ ॥ मीनका शुक्र लग्नमें हो अथवा कर्कका बृहस्पति चौथे हो अथवा तुलाका शनि ग्यारहवें हो ऐसा लग्नमें आरंभ किया घर बहुत काल पर्य्यंत लक्ष्मीसे युत रहताहै ॥ १८ ॥

द्यूनांबरे यदैकोपि परांशस्थो ग्रहो गृहम्॥अब्दान्तः परहस्तस्थं कुर्य्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥ १९ ॥
पुष्यध्रुवेन्दुहरिसर्पजलैः सजीवैस्तद्वासरेण च कृतं सुतराज्यदं स्यात् ॥ द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सशुक्रैर्वारे सितस्य च गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥ २०॥

अर्थ–एकभी ग्रह अत्यंत उत्कष्ट शुभफलदाता परांशमें स्थित होता हुआ जो सातमें हो अथवा दशमें हो तब वह गृह एक

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्षके भीतरही घरको दूसरेके हाथमें प्राप्त कराताहै जो ब्राह्मण आदि वर्णका स्वामी बलहीन हो तो ॥ १९ ॥ पुष्य तीनों उत्तरा मृगशिर श्रवण आश्लेषा पूर्वाषाढा इन नक्षत्रोंपै बृहस्पति हो और बृहस्पतिवारमें आरंभ किया घर पुत्र और राज्यको देताहै विशाखा अश्विनी चित्रा धनिष्ठा शतभिषा आर्द्रा इन नक्षत्रोंपै शुक्र स्थितहों और शुक्रवारको आरंभ किया घर धन और धान्यको देताहै ॥ २० ॥

वास्तुज्ञानमथातः कमलभवान्मुनिपरंपराप्राप्तम् ॥
क्रियतेऽधुनामयेदं विदग्धसांवत्सरप्रीत्यै ॥ २१ ॥
किमपिकिलभूतमभवत्सन्धानं रोदसी शरीरेण ॥
तदनरगणेन सहसा विनिगृह्याऽधोमुखंन्यस्तम् ॥ २२ ॥
पत्रचयेन गृहीतं विबुधेनाधिष्ठितः सतत्रैव ॥
तदमरमयं विधाता वास्तुनरं कल्पयामास ॥ २३ ॥
उत्तममष्टाभ्यधिकं हस्तशतंनृपगृहं पृथुत्वेन ॥
अष्टाष्टोनान्येवं पंच सपादानि दैर्घ्येण ॥ २४ ॥

अर्थ—इसके अनंतर वास्तुज्ञान जो ब्रह्माजीके सकाशसे परंपरागत क्रमसे गर्गमुनि आदिके द्वारा प्राप्त हुआ है अब हम कुशल ज्योतिषियोंको प्रसन्न करनेके लिये कहते हैं ॥ २१ ॥ पहले पृथिवी और आकाशको अपने देहसे रोकता हुआ कोईक भूत उपजाथा उसको देवतोंने शीघ्रही पकड अधोमुख बना पृथिवीपै गिराया ॥ २२ ॥ जो अंग जिस देवताने पकडा वह उसी अंग पर बैठ गया उस भूतको ब्रह्माजीने वास्तुपुरुष ठहराया ॥ २३ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजाका घर एकसो आठ हाथका उत्तम होता है और इसी चौडा-
ईमें आठ आठ हाथ कमकर चार घर अन्य बनतें हैं इसीप्रकार
ये पांचघर राजाके बनते हैं इन सब घरोंकी लंबाई अपनी
अपनी चौडाईसे सवाई होनी चाहिये जैसे उत्तमघर लम्बाई
१३५ हाथ और चौडाई १०८ हाथ होनी उचित है ॥ २४ ॥

षड्भिःषड्भिर्हीनासेनापतिसद्मनांचतुःषष्टिः ॥
पंचैवं विस्तारात्षड्भागसमन्विताद्दैर्ध्यम् ॥ २५ ॥
सृष्टिश्चतुर्विहीना वेश्मानि भवंति पंचसचिवस्य ॥
स्वाष्टांशयुताद्दैर्घ्यं तदर्धतो राजमहिषीणाम् ॥ २६ ॥
षड्भिः षड्भिश्चैवं युवराजस्यापवर्जिताशीतिः ॥
त्रीशान्विता च दैर्घ्यं पंचतदर्धैस्तदनुजानाम् ॥ २७ ॥
नृपसचिवानांतुल्यं सामन्तप्रवरराजपुरुषाणाम् ॥
नृपइवराजविशेषः कंचुकिवेश्याकलाज्ञानाम् ॥ २८ ॥

अर्थ—राजाके सेनापतीका चौंसठ हाथ चौडा उत्तम घर
होता है फिर छः छः हाथ कमकर और चार घरोंकी चौडाई
होती है इसीप्रकार सेनापतिके पांचघर हैं इन्होंके चौडाईमें जो
अपना अपना छठा भाग जोडदिया जावे तो उन घरोंकी लम्बा-
ईका प्रमाण होसक्ता है ॥ २५ ॥ राजाके मंत्रीका साठ हाथ
चौडा उत्तम घर होता है फिर साठमें चार चार कमकर चार
घरोंका प्रमाण होता है इसीप्रकार मंत्रीके पांचघर हैं इन घरोंकी
चौडाईमें अपना अपना अष्टमांश जोड़ दे तो इन्होंकी लंबाईका
प्रमाण होसक्ता है इन पांच घरोंकी चौड़ाई लंबाईको आधे

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधे प्रमाणके समान चौड़े और लम्बे पांच घर राजाकी पटरानी के होते हैं॥ २६ ॥ युवराजका उत्तमघर अस्सी हाथ चौड़ा होता है फिर छः कमकर अन्य चार घरोंकी चौडाईका प्रमाण होता है युवराजके पांचघर हैं इन्होंकी चौड़ाई लम्बाईके आधे२केतुल्य लम्बे चौड़े पांचघर युवराजके छोटे भाईयोंके होते हैं ॥ २७॥ राजा और मंत्रीके पांच घरोंकी लम्बाई चौड़ाईका जो अन्तर हो उतने लम्बे चौड़े पांचघर मांडलिक राजा और राजाके प्रधान पुरुषोंके होते हैं राजाके पांच घर और युवराजके पांचघरोंकी लम्बाई चौड़ाईका अंतरके समान लम्बे चौड़े पांचं घर कंचुकी वेश्या और कलाजाननेवालेंाके होते हैं ॥ २८ ॥

अध्यक्षाधिकृतानां सर्वेषांकोशभोगयोस्तुल्यम् ॥
युवराजमंत्रिविवरं कर्मांताध्यक्षदूतानाम् ॥ २९ ॥
चत्वारिंशद्धीना चतुश्चतुर्भिस्तु पंचयावदिति ॥
षड्भागयुतादैर्घ्यं दैवज्ञपुरोधसोर्भिषजः ॥ ३० ॥
वास्तुनि योविस्तारः सएवचोच्छ्रायः निश्चयेशुभदः ॥
शालैकेषु गृहेष्वपि विस्ताराद्विगुणितं दैर्घ्यम् ॥३१ ॥
चातुर्वर्ण्येऽथासो द्वात्रिंशत्स्याच्चतुश्चतुर्हीनाः ॥
आषोडशादिति परंन्यूनतरमतीवहीनानाम् ॥ ३२ ॥

अर्थ–घोडोंकी शाला हाथियोंकी शाला इन आदिके मालिक और अन्यकार्योंके अधिकारी इनसबके घरका प्रमाण कोशघर और भोगघरके प्रमाण होताहै युवराज और मंत्रीके घरकी लंबाई चौडाईका अंतरके तुल्य कर्मशालाका स्वामीका

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और दूतोंके घरकी लंबाई चौडाई होतीहै ॥ २९ ॥ ज्यौतिषी पुरोहित और वैद्य इन्होंका उत्तम घर चालीस हाथ चौडा होता है फिर चार कमकर अन्यचार घरोंकी चौडाई होतीहै इस प्रकार इनकेभी पांच घर बनतेहैं इनकी चौड़ाईमें अपना छठाहिस्सा जोड़देतो इनकी लंबाईका प्रमाण होताहै ॥ ३० ॥ घरकी चौड़ाईके समान ऊंचाईभी हो तो शुभहै वह लंबाई चौडाई चार शालोवाले घरकी कही एक शालावाला घर हो तो उसका चौडाईसे दूनी लंबाई होतीहै ॥ ३१ ॥ ब्राह्मणके मुख्य घरकी चौडाई बत्तीस हाथ और चार हाथ कमकर अन्यचार घर होतेहैं क्षत्रियके मुख्य घरकी चौडाई २८ हाथ होतीहै इसमें २ कमकर अन्यतीन घर होतेहैं वैश्यके मुख्य घरकी चौडाई चौबीश हाथहै इसमें २ कमकर अन्य २ घर बनतेहैं शूद्रका मुख्य घर २० हाथ चौड़ाहै इसमें चार हाथ कमकर एक घर अन्य बनताहै इस प्रकार सोलह हाथकी चौडाई तक घर बनतेहैं इससेभी चौडाईमें कम घर नीचोंका होताहै ॥ ३२ ॥

सदशांशं विप्राणां क्षत्रस्याष्टांशसंयुतं दैर्घ्यम् ॥
षड्भागयुतं वैश्यस्य भवति शूद्रस्यपादयुतम् ॥३३॥
नृपसेनापतिगृहयोरंतरमानेनकोशरतिभवने ।
सेनापतिचातुर्वर्ण्यविवरतो राजपुरुषाणाम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–ब्राह्मणके घरकी चौडाईमें उसका दशांश जोड़दे तो लंबाई होजातीहै क्षत्रियके घरकी चौडाईमें आठमां हिस्सा जोड़दे और वैश्यकीमें छठा हिस्सा और शूद्रकीमें चौथा हिस्सा

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जोडनेसे उसकी लंबाई होसक्तीहै ऐसे ब्राह्मणके पांच घर क्षत्रियके ४ घर वैश्यके ३ घर और शूद्रका एक घर होताहै ॥ ॥ ३३ ॥ राजा और सेनापतिके घरकी लंबाई चौडाईके अंतरके समान लंबाई चौडाई खजानाघर और भोगघरकी होतीहै सेनापतिका पहला घर और ब्राह्मणका घर इन्होंका अंतरके तुल्य ब्राह्मण राजपुरुषका घर होताहै सेनापतिका दूसरा घर और क्षत्रियका घर इन्होंका अंतरके स्थान क्षत्रियराजपुरुषका घर होताहै सेनापतिका तीसरा घर और वैश्यका घर इन्होंका अंतरके समान वैश्यराजपुरुषका घर होताहै सेनापतिका चौथा घर और शूद्रका घर इन्होंका अंतरके समान शूद्रराजपुरुषका घर होताहै ॥ ३४ ॥

अथ पारभवादीनां स्वमानसंयोगदलसमं भवनम् ॥
हीनाधिकं स्वमानादशुभकरं वास्तु सर्वेषाम् ॥ ३५ ॥
पश्वाश्रमिणाममितं धान्यायुधवह्निरतिगृहाणांच ॥
नेच्छन्ति शास्त्रकारा हस्तशतादुच्छ्रितं परतः ॥३६॥
सेनापतिनृपतीनां सप्ततिसहिते द्विधाकृते व्यासे ॥
शालाचतुर्दशहृतेपंचत्रिंशद्धृतेऽलिन्दः ॥ ३७ ॥

अर्थ—ब्राह्मणसे शूद्रस्त्रीमें जो उत्पन्न होय वह पारभव कहाता है इस भांति और भी अंबष्ठ आदि वर्णसंकरोंके घरकी लंबाई चौडाई उनके माता पिताके जो वर्ण उनके घरकी लंबाई चौडाईके जोडका आधा होतीहै जैसा ब्राह्मण और शूद्रके घरके मानको जोड आधा करे तो पारभवके घरका मान

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होताहै ऐसेही औरोंकाभी जानो कहेहुये मानसे जो वास्तु हीन अथवा अधिक होय वह सबके लिये अशुभ होता है ॥ ३५ ॥ पशुओंके और परिव्राट आदि आदमियोंके घरका कुछ मान नहीं चाहैं जितना लंबा चौडाकर लेवे इसीप्रकार धान्य शस्त्र और तिनके घरकाभी कुछ नियम नहींहै और वास्तुशास्त्रको जाननेवाले सौ हाथसे अधिक घरकी ऊंचाई नहीं चाहते हैं ॥ ३६ ॥ सेनापति और राजाके घरकी चौडाईमें ७० जोड दो स्थानपर लिखै एक स्थानमें चौदहका भाग देवे जो हाथ औ अंगुल लब्ध होय वह शालाका मान होताहै और दूसरे स्थानमें पैतीसके भागसे लब्ध फल अलिन्दका मान है शाला शब्द करके घरके भीतरका प्रमाण लेना और शालाके भीतिके बाहिर जो गमनिका जालिसे घिरी हुई अंगनके सम्मुख बनती है उसको अलिन्द कहतेहैं ॥ ३७ ॥

हस्तद्वात्रिंशादिषुचतुश्चतुस्त्रित्रिकत्रिकाः शालाः ॥
सप्तदशांत्रितपातिथित्रयोदशकृतांऽगुलाऽभ्यधिकाः॥
॥ ३८ ॥ त्रित्रिद्विद्विद्विसमाः क्षपक्रमादंगुलानि चैतेषाम् ॥ व्येका विंशतिरष्टौ विंशतिरष्टादश त्रितयम् ॥ ३९ ॥

अर्थ–बत्तीसहाथ आदि जो ब्राह्मण आदि वर्णोंके घरका प्रमाण कहा उनकी शालाका प्रमाण यह है कि ब्राह्मणके प्रधान घरमें चारहाथ सत्रह अंगुल शालाकी चौडाई होतीहै दूसरे घरमे चार हाथ तीन अंगुल तीसरेमें तीनहाथ पन्द्रह अंगुल चौथेमें

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीनहाथ तेरह अंगुल और ब्राह्मणके पांचवे घरमें शालाका प्रमाण तीन हाथ चार अंगुल होताहै ब्राह्मणका दूसराघर क्षत्रियका प्रधानहै क्षत्रियका दूसरा घर वैश्यका प्रधानहै वैश्यका दूसरा घर शूद्रका प्रधान घरहै इसभांति सब वर्णोंके घरमें शालाका प्रमाण जानों ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणके प्रधान घरमें तीनहाथ उन्नीस अंगुल अलिन्दका प्रमाणहै दूसरेघरमें तीन हाथ आठ अंगुल तीसरेमें दोहाथ वीस अंगुल चौथेमें दो हाथ अठारह अंगुल और ब्राह्मणके पांचवे घरमें अलिंदका प्रमाण दोहाथ तीन अंगुलहै इन हाथोंके साथ गृहक्रमसे ये अंगुल कहेहैं इस आर्या छंदमें क्षयशब्द गृहका वाचकहै ॥ ३९ ॥

शालात्रिभागतुल्याकर्त्तव्यावीथिका बहिर्भवनात् ॥
यद्यग्रतो भवतिसा सोष्णीषं नामतद्वास्तु ॥ ४० ॥
सापाश्रयमिति पश्चात् सावष्टंभन्तु पार्श्वसंस्थितया ॥
सुस्थितमितिचसमंताच्छास्त्रज्ञैः पूजिताः सर्वाः ॥४१॥
विस्तारषोडशांशः सचतुर्हस्तोभवेद्गृहोच्छ्रायः ॥
द्वादशभागेनोनोभूमौ भूमौ समस्तानाम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–शालाकी तिहाईके तुल्य घरके बाहिर वीथी बनावै जो वह वीथी वास्तुके आगे हो तो उस वास्तुको सोष्णीष कहतेहैं पिछलीओर होय तो सापाश्रय दहिने वाये होय तो सावष्टंभ और वास्तुके चारों ओर वीथी होय तो उस वास्तुको सुस्थित कहतेहैं ये सब वीथी शास्त्रके जाननेवालोंने शुभ कहीहै ॥ ॥ ४१ ॥ घरकी चौडाईके मानमें सोलहका भागदेकर जो

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लब्ध आवे उसमें चार हाथ और जोडे वही घरकी पहली भूमिका टुकड़ाकी ऊंचाईका प्रमाण होताहै उसमें उसका द्वादशांश घटादेवे तो दूसरी भूमिकाकी ऊंचाई होजातीहै इसी भांति द्वादशांश घटाते २ तीसरी चौथी आदि सब भूमिकाओंकी ऊंचाईका मान होताहै ॥ ४२ ॥

व्यासात्षोडशभागाः सर्वेषां सद्मनां भवति भित्तिः॥
पक्केष्टकाकृतानां दारुकृतानां तु न विकल्पः ॥ ४३ ॥
एकादशभागयुतः स सप्ततिर्नृपबलेशयोर्व्यासः॥
उच्छ्रायोऽङ्गुलतुल्यो द्वारस्यार्द्धेन विष्कम्भः ॥ ४४ ॥
विप्रादीनां व्यासात् पञ्चांशोऽष्टादशांगुलसमेतः॥
साष्टांशोविष्कम्भो द्वारस्य त्रिगुण उच्छ्रायः॥ ४५॥

अर्थ–सब घरोंकी भीतिका प्रमाण घरकी चौडाईके षोडशांशके तुल्य होताहै यह नियम पक्की ईंटोंके घरमें हैं काठके घरमें भीत चौडाई लंबाई ऊंचाई आदिका कुछ नियम नहीं॥ ॥४३॥राजा औ सेनापतिके घरकी चौडाईमें उसका एक दशांश जोडकर सत्तर और जोडै जो अंक होय उतने अंगुल ऊंचा उनके घरका द्वार बनाना चाहिये और द्वारकी उंचाईसे आधी द्वारकी चौडाई रखनी चाहिये ॥ ४४ ॥ ब्राह्मण आदि वर्णोंके घरकी जो चौडाई उसका पंचमांश लेवे लब्ध फलको अंगुल माने उसमें अठारह अंगुल जोड देवे फिर उसका अष्टमांश उसीमें जोडै इसप्रकार जितने अंगुल होय वह उनके द्वारकी चौडाईसे तिगुणी द्वारकी उंचाई होतीहै ॥ ४५ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उच्छ्रायहस्तसंख्यापरिमाणान्यंगुलानि बाहुल्यम् ॥
शाखाद्वयेऽपिकार्यं सार्द्धं तत्स्यादुदुम्बरयोः ॥ ४६ ॥
उच्छ्रायात्सप्तगुणादशीतिभागः पृथुत्वमेतेषाम् ॥
नवगुणितेशीत्यंशः स्तम्भस्य दशांशहीनोऽग्रे ॥ ४७॥
समचतुरस्रोरुचको वज्रोष्टाभिर्द्विवज्रको द्विगुणः ॥
द्वात्रिंशतातुमध्ये प्रलीनकोवृत्त इतिवृत्तः ॥ ४८ ॥

अर्थ—द्वारकी चौखटकी दोनों भुजाओंको शाखा कहतेहैं और ऊपर नीचेके काष्ठ सिरधर और देहलीको उदुम्बर कहतेहैं द्वार जितने हाथ ऊंचाहोवे उतने अंगुल शाखाओंकी मोटाई रखनी चाहिये और शाखाओंसे दवढी मोटाई उदुम्बरोंकी होतीहै॥ ४६॥ ऊंचाईको सात गुणकर अस्सीका भाग देनेसे जो लब्ध मिले वह इस सबकी चौडाईहै स्तंभकी ऊंचाई कोनोंसे गुणकर अस्सीका भाग देनेसे जो लब्ध होय वह स्तंभके मूलकी मोटाई होतीहै और उसका दशांश उसमें घटावै तो स्तंभके अग्रभागको मोटाईका मान होताहै जो स्तम्भ मध्यभागमें चतुरस्र होय वह रुचक कहाताहै अष्टास्र होय वह वज्र कहाताहै षोड-शास्र होय वह द्विवज्रक औ बत्तीस कोणका मध्यमें होय वह प्रलीनक और जो स्तंभ बीचसे गोल होय वह वृत्त कहाताहै ॥

स्तंभं विभज्य नवधावहनं भागो घटोऽस्य भागोन्यः ॥
पद्मं यथोत्तरोष्ठं कुर्याद्भागेनभागेन ॥ ४९ ॥
स्तंभसमं बाहुल्यं भारतुलानामुपर्युपर्यासाम् ॥
भवति तुलोपतुलानामूनं पादेन पादेन ॥ ५० ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अप्रतिसिद्धालिन्दं समन्ततो वास्तु सर्वतोभद्रम् ॥
नृपविबुधसमूहानां कार्यं द्वारैश्चतुर्भिरपि ॥ ५१ ॥

अर्थ—स्तंभके समान नौ भागकर सबसे नीचेके भागको वहन बनावे भूमिपर जिसके ऊपर स्तंभ रहताहै उसको वहन कहतेहैं वहनके ऊपर एक भागमें घर बनावे उसके ऊपरले भागमें कमल बनावे उसके ऊपरले भागमें उत्तरोष्ठ बनाकर शेष पांच भागोंको चतुरस्र आदि बनादेवै शोभाके लिये जिसमें अनेक प्रकारके चित्र बनाये जातेहैं उसको उत्तरोष्ठ कहतेहैं ॥ ४९ ॥ स्तंभके ऊपर जो तिरछा काष्ठ रक्खा जाताहै उसको भारतुला कहतेहैं और भारतुलाके ऊपर जो और काष्ठ लगाये जातेहैं उनकी तुलोपतुल संज्ञाहै भारतुलाकी मोटाई स्तंभकी मोटाईके तुल्य होतीहै और तुलोपतुलोंकी मोटाई चौथाई २ घटानेसे होतीहै ॥ ५० ॥ जिस वास्तुमें चारों ओर अलिंद बनायें जावें वह चार द्वारों करके युक्त सर्वतोभद्रनाम वास्तुराजा औरदेवताओंके समूहके लिये बनाना चाहिये ॥ ५१ ॥

नन्द्यावर्तमलिन्दैः शालाकुड्यात्प्रदक्षिणांतगतैः ॥
द्वारं पश्चिममस्मिन्विहाय शेषाणि कार्याणि ॥ ५२ ॥
द्वारालिंदोन्तगतः प्रदक्षिणोन्यः शुभस्ततश्चान्यः ॥
तद्वच्चवर्द्धमाने द्वारंतु तत्र दक्षिणे कार्य्यम् ॥ ५३ ॥
अपरेन्तगतोऽलिन्दः प्रागन्तगतौ तदस्थितौ चान्यौ ॥
तदवधि विधृतश्चान्यः प्राग्द्वारं स्वस्तिके शुभदम् ५४

अर्थ—शालाकी भीतिसे लेकर प्रदक्षिण क्रमसे जो अलिन्द

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनकरके युक्त वास्तु नंद्यावर्त कहाता है उसमें पश्चिम दिशाको छोड शेष तीन दिशाओंमें तीन द्वार रक्खै ॥ ५२ ॥ प्रधान वास्तुके द्वारका अलिन्द अंतर्गत अर्थात् दक्षिणोत्तरशालासंलग्न बनावे दूसरा शुभ अलिन्द प्रदक्षिण बनावै और उसके अंतमें एक और अलिंद बनावे और दक्षिणदिशामें द्वार न रक्खै शेष तीन दिशाओंमें रक्खे वह वास्तु वर्द्धमान कहाता है ॥ ५३ ॥ पश्चिमदिशाका अलिन्द दक्षिणोत्तरशाला संलग्न बनावै उसे पश्चिम अलिन्दसे उत्पन्न और दो अलिन्द पूर्व दिशाकी शालासे लगे हुये बनावे उन दोनोंके मध्यमें चौथा अलिन्द बनावे इस वास्तुका नाम स्वस्तिक है इसमें पूर्वदिशाका द्वार अशुभ होताहै इसलिये पूर्वको छोड शेष तीन दिशाओंमें द्वार रक्खैं ॥ ५४ ॥

प्राक्पश्चिमावलिंदावन्तगतौ तदवधिस्थितौ शेषौ ॥
रुचके द्वारं न शुभदमुत्तरतश्चातिशस्तानि ॥ ५५ ॥
श्रेष्ठं नंद्यावर्तं सर्वेषां वर्द्धमानसंज्ञंच ॥
स्वस्तिकरुचके मध्ये शेषं शुभदन्नृपादीनाम् ॥ ५६ ॥
उत्तरशालाहीनं हिरण्यनाभं त्रिशालकं धन्यम् ॥
प्राक्छालया वियुक्तं सुक्षेत्रं वृद्धिदंवास्तु ॥ ५७ ॥
याम्याहीना चुल्ली त्रिशालकं वित्तनाशकरमेतत् ॥
पक्षघ्नमपरयावर्जितं सुतध्वंसवैरकरम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिमके दो अलिन्द दक्षिणोत्तर शालासे लगे हुये बनावे दक्षिण उत्तर अलिन्दके उन दोनोंसे लगेहुये बनावे यह रुचकनाम वास्तु कहाता है इसमें उत्तरदिशाका द्वार शुभ नहीं

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होता इस लिये उत्तरको छोड शेष तीन दिशाओंमें द्वार बनावे ॥ ५५ ॥ नंद्यावर्त और वर्धमान ये दो सब वर्णोंके लिये श्रेष्ठ हैं स्वस्तिक और रुचक सबके लिये मध्यम हैं न शुभ और न अशुभ और सर्वतोभद्र केवल राजा, राजमंत्री आदिके लियेही शुभ है ॥ ५६ ॥ जिस वास्तुमें उत्तरकी ओर शाला न बनै शेष तीन दिशाओंमें शाला होय वह त्रिशालक हिरण्यनाभ नामक शुभ होता है, पूर्वशाला करके हीन त्रिशालक सुक्षेत्र नामक धन, पुत्र आदिकी वृद्धि करता है ॥ ५७ ॥ दक्षिण दिशाकी शाला जिसमें न होय वह त्रिशालक चूल्लीनामक धनका नाश करता है पश्चिम दिशाकी शाला करके रहित त्रिशालक पक्षघ्र नामक पुत्रका नाश और वैर करता है ॥ ५८ ॥

सिद्धार्थमपरयाम्ये यमसूर्यं पश्चिमोत्तरे शाले ॥
दण्डाख्यमुदकपूर्वे वाताख्यं प्राग्युता याम्या ॥ ५९ ॥
पूर्वापरे तु शाले गृहचुल्ली दक्षिणोत्तरे कार्यम् ॥
सिद्धार्थेऽर्थावाप्तिर्यमसूर्ये गृहपतेर्मृत्युः ॥ ६० ॥
दण्डवधौ दण्डाख्ये कलहोद्वेगः सदैव वाताख्ये ॥
वित्तविनाशश्चुल्ल्यां ज्ञातिविरोधः स्मृतः काचे ॥ ६१ ॥
एकाशीतिविभागे दश दश पूर्वोत्तरायतारेखाः ॥
अन्तस्त्रयोदश सुराद्वात्रिंशद्बाह्यकोष्ठस्थाः ॥ ६२ ॥

अर्थ-पश्चिम और दक्षिणमें दोही शाला जिस घरमें होयँ वह सिद्धार्थ कहाताहै पश्चिम और उत्तरमें शाला होय वह यम सूर्यहै उत्तर पूर्वमें जिसमें दो शाला होयँ उसका नाम दण्डहै पूर्व

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दक्षिणमें दो शाला होय वह बात कहाताहै ॥ ५९ ॥ पूर्व पश्चिममें दो शाला होय उसकी गृहचुल्ली संज्ञाहै और दक्षिण और उत्तरमें जिस घरमें दो शाला होयँ उस द्विशालकको काच कहतेहैं सिद्धार्थनाम द्विशालमें धनकी प्राप्ति होतीहै यमशूर्पमें घरके स्वामीका मृत्यु होताहै ॥ ६० ॥ दण्डनाम द्विशालमें दंड और वध होताहै. वातमें सदा कलह और उद्वेग होताहै. गृहचुल्लीमें धनका नाश और काचमें बंधुवोंसे विरोध होताहै ॥ ६१ ॥ एकास्सी पदका वास्तु कहतेहैं क्षेत्रमें पूर्वपश्चिम दशरेखा और दक्षिणोत्तर दशरेखा करनेसे इकासी कोठें बन जातेहैं इस एकाशीति पदक्षेत्रमें तेरह देवता भीतरहैं और बत्तीस बाहरके कोष्टोंमें हैं ॥ ६२ ॥

शिखिपर्जन्यजयन्तेन्द्रसूर्यसत्याभृशान्तरिक्षश्च ॥
ऐशान्याद्याः क्रमशो दक्षिणपूर्वेऽनिलः कोणे ॥ ६३ ॥
पूषावितथबृहत्क्षतयमगन्धर्वाख्यभृङ्गराजमृगाः ॥
पितृदौवारिकसुग्रीवकुसुमदन्ताम्बुपत्यसुराः ॥ ६४ ॥
शोषोघ्नपापयक्ष्मा रोगः कोणे ततोहि मुख्यौ च ॥
भल्लाटसोमभुजगास्ततोऽदितिर्दितिरितिक्रमशः॥६५॥

अर्थ--वास्तुके बाहिरके चारों ओरके कोठोंमें ईशानकोणसे लेकर क्रमसे ये देवताहैं । शिखी, पर्जन्य, जयन्त, इन्द्र, सूर्य्य, सत्य,भृश और अंतरिक्ष फिर अग्निकोणसे वायु, पूषा ॥ ६३॥ वितथ, बृहत्क्षत, यम, गंधर्व, भृंगराज और मृग ये दक्षिण दिशामें हैं. नैर्ऋत्य कोणसे पिता, दौवारिक, सुग्रीव, कुसुमदन्त, वरुण,

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असुर ॥ ६४ ॥ शोष और पापयक्ष्मा ये पश्चिमके देवताहैं. वायव्यसे लेकर रोग, अहिमुख्य, भल्लाट, सोम, भुजग, अदिति, और दिति ये उत्तरके देवताहैं. इस भांति क्रमसे बत्तीस देवता स्थितहैं अब मध्यके देवता कहतेहैं ॥ ६५ ॥

मध्ये ब्रह्मानवकोष्ठकाधिपोऽस्यार्यमास्थितः प्राच्याम् ॥
एकांतरात्प्रदक्षिणमस्मात्सविता विवस्वांश्च ॥ ६६ ॥
विबुधाधिपतिस्तस्मान्मित्रोऽन्येषां राजयक्ष्मनामाच ।
पृथ्वीधरापवत्सावित्येतेब्रह्मणः परिधौ ॥ ६७ ॥
आपोनामैशाने कोणे हौताशने च सावित्रः ॥
जय इति च नैर्ऋते रुद्रअनिलेऽभ्यन्तरपदेषु ॥ ६८ ॥

अर्थ—वास्तुके मध्यमें नौ कोठोंका अधिपति ब्रह्मा स्थितहै, इससे पूर्वदिशामें अर्य्यमा स्थितहै अर्यमासे प्रदक्षिण क्रमकरके एक एक कोष्टके अंतरसे सविता विवस्वान् ॥ ६६ ॥ इन्द्र, मित्र, राजयक्ष्मा, पृथ्वीधर और आपवत्स ये आठ ८ देवता एक २ कोष्टके अंतरसे ब्रह्माके परिधिमें अर्थात् चारों ओर स्थितहैं ६७ ईशानकोणमें पर्जन्यके नीचे आप अग्निकोणमें अंतरिक्षके नीचे सावित्र नैर्ऋत्यमें दौवारिकके नीचे जय और वायव्य-कोणमें पापयक्ष्माके नीचे रुद्र स्थितहैं ये देवता भीतरके कोष्टमें स्थितहैं ॥ ६८ ॥

आपस्तथापवत्सः पर्जन्योग्निर्दितिश्च वर्गोयम् ॥
एवं कोणे कोणे पदिकाःस्युः पंचपंचसुराः ॥ ६९ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाह्याद्विपदाःशेषास्ते विबुधा विंशतिः समाख्याताः ॥
शेषाश्चत्वारोन्येत्रिपदादिचर्यमाद्यास्ते ॥ ७० ॥

अर्थ—आप,आपवत्स, पर्जन्य, अग्नि और दिति यह देवसमूह एक २ कोष्टका स्वामीहै इसीभांति कोण २ में पांच २ देवता एक २ पदके स्वामीहैं जैसें ये ईशानकोणमें पांचहैं इसीभांति अग्निकोणमें सविता, सावित्र, अंतरिक्ष, वायु, और पूषा नैर्ऋत्यकोणमें इंद्र, जय, दौवारिक, पिता, मृगा, राजयक्ष्मा, रुद्र, पापयक्ष्मारोग औ अह्य ये पांच देवता; वायव्यकोणमें एकपदिक हैं॥६९॥ शेष बारहके कोष्टोंमें स्थित देवता दो २ पदके स्वामी हैं पूर्वमें जयंत, इन्द्र, सूर्य, सत्य, औ भृश ये पूर्वमें; वितथ, बृहत्क्षत, गंधर्व, यम, और भृंगराज ये पांच दक्षिणमें; सुग्रीव, कुसुमदन्त, वरुण, असुर और शेष ये पश्चिममें मुख्य; भल्लात,सोम, भुजग औ दिति ये पांच देवता उत्तरमें द्विपदिक हैं; शेष अर्यमा, विवस्वान् मित्र और पृथ्वीधर ये चार देवता ब्रह्मासे पूर्वआदि दिशाओंमें स्थित तीन २ पदके स्वामी हैं अर्थात् जिस पदमें बैठेहैं उसके दोनोंओर एक २ पद औरभी इनका है बीचमें नौपदका स्वामी ब्रह्माहै इसभांतिके सब देवता ४५ हैं ॥ ७० ॥

पूर्वोत्तरदिङ्मूर्द्धापुरुषोपमवाङ्मुखोऽस्यशिरसिशिखी
आपो मुखेस्तनेऽस्याऽर्यमाह्युरस्यापवत्सश्च ॥ ७१ ॥
पर्जन्याद्याबाह्याद्दक्छ्रवणोरस्थलांसगादेवाः ॥
सत्याद्याः पंचभुजेहस्तेसविताचसावित्रः ॥ ७२ ॥
वितथो बृहत्क्षतयुतःपार्श्वे जठरेस्थितो विवस्वांश्च ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऊरू जानूजंघे स्फिगितियमाद्यैः परिगृहीताः ॥ ७३ ॥
एतेदक्षिणपार्श्वेस्थानेष्वेवंचवामपार्श्वस्थाः ॥
मेढ्रेशक्रजयंतौ हृदये ब्रह्मापितांघ्रिगतः ॥ ७४ ॥

अर्थ--यह वास्तुपुरुष अधोमुखहै और इसका शिर ईशान कोणमें है, इसके शिरपर शिखी स्थितहै, मुखपर आप, स्तनपर अर्यमा,छातीपर आपवत्स स्थितहै॥ ७१ ॥ पर्जन्यआदि बाहिरके चार देवता अर्थात् पर्जन्य, जयंत इन्द्र और सूर्य ये चार क्रमसे नेत्र, कर्ण, उरःस्थल और स्कंधपर स्थितहैं. सत्य आदि पांच देवता भुजापर स्थितहैं. सविता और सावित्र हाथपर स्थित हैं ॥ ७२ ॥ वितथ और बृहत्क्षत पार्श्वपर स्थितहैं विवस्वान उदरपर स्थितहै यम ऊरूपर, गन्धर्व जानुपर, भृंगराज जंघापर और मृग स्फिक्के ऊपर स्थितहै ॥ ७३ ॥ ये देवता वास्तु-पुरुषके दाहिने ओर स्थितहैं इसीभांति बाँईओरभी देवता स्थितहैं अर्थात् वामस्तनपर, पृथिवीधर नेत्रपर दिती कर्णपर अदिति बांईओरकी छातीपर भुजंग स्कंधपर सोम भुजपर भल्लात मुख्य अहि रोग और पाप यक्ष्मा ये पांच स्थितहैं वामहस्तपर रुद्र और राजयक्ष्मा पार्श्वपर शोष और असुर ऊरूपर वरुण जानुपर कुसुमदंत जंघापर सुग्रीव औ स्फिक् कूलाऊपर दौवा-रिक स्थितहैं ये वास्तुपुरुषके वामभागमें स्थितहैं वास्तुपुरुषके लिंगपर इन्द्र और जयंत स्थितहै हृदयपर ब्रह्मादि स्थितहैं और पैरोंपर पिता स्थितहै यह नगर ग्राम घर आदिमें इकासी पदके वास्तुका विभाग कहाहै अब चतुःषष्टिपदवास्तु कहतेहैं ॥ ७४ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अष्टाष्टकपदमथवा कृत्वारेखाश्चकोणगास्तिर्यक् ॥
ब्रह्माचतुष्पदोऽस्मिन्नर्धपदा ब्रह्मकोणस्थाः ॥ ७५ ॥
अष्टौचवहिःकोणेष्वधः पदास्तुह्युभयस्थिताः सार्धाः ॥
उक्तेभ्योयेशेषास्ते द्विपदाविंशतिस्तेच ॥ ७६ ॥

अर्थ--अथवा चौसठ कोष्टोंकाही वास्तु बनावै अर्थात् नौ रेखा पूर्वपश्चिमें औ नौ रेखा दक्षिणोत्तर खैंचकर चौसठ कोठे वास्तुमें बनावें और चारों कोणोंमें कर्णके आकार दो तिरछी रेखा खैच देवै इस पदमें ब्रह्मा चार कोष्टोंका स्वामी है ब्रह्माके कोणोंमें स्थित आठ देवता आपवत्स,सविता, सावित्र, इंद्र, जयंत, राजयक्ष्म और रुद्र ॥७५॥ और बाहिरके कोठेमें स्थित आठ देवता.शिखी अंतरिक्ष, वायु, मृग, पिता, पापयक्ष्मा रोग औ दिति ये सब अर्धपदिक अर्थात् आधे २ कोष्ठके स्वामीहैं और इनके दोनोंओर स्थित पर्जन्य, भृश, भृंगराज, दौवारिक शेषनाग और अदिति ये सार्ध पदिक अर्थात् डेढ २ पदके स्वामीहैं और शेष वीस देवता जयंत, इन्द्र, सूर्य, सत्य, वितथ, बृहत्क्षत, यम, गंधर्व, सुग्रीव, कुसुमदंत, वरुण, असुर, मुख्य, भल्लात, सोम, भुजंग, अर्यमा, विवस्वान्, मित्र, पृष्ठ, पृथ्वीधर, ये सब द्विपद अर्थात् २ दो कोष्टके स्वामीहैं यह चौंसठ पदका वास्तु कहाहै ॥ ७६ ॥

संपाता वंशानां मध्यानि समानि यानि च पदानाम् ॥
मर्माणि तानि विद्यान्न तानि परिपीडयेत्प्राज्ञः ॥७७॥
तान्यशुचिभाण्डकीलस्तम्भाद्यैः पीडितानि शल्यैश्च॥
गृहभूतस्तत्तुल्ये पीडासंगे प्रयच्छन्ति ॥ ७८ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कण्डूयते यदङ्गं गृहभर्तुर्यत्र यामराहुत्याम् ॥
अशुभं भवेन्निमित्तं विकृतिर्वाग्नेः सशल्यंतत् ॥ ७९ ॥

अर्थ–वंशोंके संपात जो आगे कहेंगे और पदोंके समसंध्य ये वास्तुके मर्म जाने । बुद्धिमान् पुरुष कभी इनको पीडन न करे ॥ ॥ ७७ ॥ ये वास्तुके मर्मस्थान अपवित्र भाण्डकीलस्तंभ आदि करके औ शल्य जो आगे कहेंगे उन करके पीडितहो तो घरके स्वामीके उस २ अंगमें अर्थात् वास्तुका जो अंग होय उसी अंगमें पीडा करतेहैं ॥ ७८ ॥ होमके अथवा प्रश्नके समय घरका स्वामी जिस अपने अंगको खुजलावे वास्तुके उस अंगमें शल्य होताहै और शिखीआदि जिस देवताके आहुति देनेके समय छींक रोदन अग्नि अशुभनिमित्त होय अथवा अग्निमें कुछ विकार उत्पन्न होय तोभी वह देवता वास्तुपुरुषके जिस अंगमें होय उस अंगको शल्य युक्त जानै ॥ ७९ ॥

धनहानिर्दारुमये पशुपीडारुङ्मयानि चास्थिकृते ॥
लोहमये शस्त्रभयं कपालकेशेषुमृत्युः स्यात् ॥ ८० ॥
अङ्गारेस्तेनभयं भस्मनिचविनिर्दिशेत्सदाग्निभयम् ॥
शल्यंहि मर्मसंस्थं सुवर्णरजताहतेऽत्यशुभम् ॥ ८१ ॥
मर्मण्यमर्मगोवारुणदध्यर्थागमं तु ससमूहः ॥
अपिनागदन्तको मर्मसंस्थितो दोषकृद्भवति ॥ ८२ ॥

अर्थ–काष्ठका शल्य होय तो धनहानि, हड्डियोंका शल्य होय तो पशुपीडा औ रोगभय होताहै, लोहके शल्यसे शस्त्रभय,

LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. ......
CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कपाल औ केशोंके शल्यसे मृत्यु ॥ ८० ॥ कोंयलोंके शल्यसे चोरभय, भस्मके शल्यसे सदा अग्निभय होताहै. सुवर्ण औ चांदी विना और कोई शल्य जो वास्तुपुरुषके मर्ममें स्थित होय तो बहुत अशुभ होताहै ॥ ८१ ॥ जो धान आदिके तुष वास्तु-पुरुषके मर्मस्थानमें चाहै और किसी स्थानमें होवे तो धनके आगमनको रोकतेहैं नागदन्त शुभभीहै; परंतु मर्मस्थानमें होय तो दोष करनेवालाही होताहै ॥ ८२ ॥

रागाद्वायुं पितृतोहुताशनं शोषसूत्रमपि वितथात् ॥
मुख्याद्भृशं जयंताच्चभृंगमदितेश्च सुग्रीवम् ॥ ८३ ॥
तत्संपाता नवयेतान्यतिमर्माणि संप्रदिष्टानि ॥
एकपदस्याष्टांशस्तत्प्रोक्तं मर्मपरिमाणम् ॥ ८४ ॥
पदहस्तसंख्यया संमितानि वंशोऽगुलानि विस्तीर्णः ॥
वंशव्यासोऽप्यर्धः शिराप्रमाणं प्रतिनिर्दिष्टम् ॥ ८५ ॥

अर्थ—वास्तुपुरुषमें रोग नाम देवतासे अनिल अर्थात् पिता-से शिखिपर्यन्त वितथसे शोषपर्यन्त मुख्यसे भृशपर्यन्त जयं-तसे भृङ्गपर्यन्त और अदितिसे सुग्रीवपर्यन्त सब डाले ॥ ८३ ॥ इन सबोंके जो नौ " संपात " वे वास्तुपुरुषके अतिमर्म कहे हैं एकपदका जो अष्टमांश वह मर्मका परिमाण है ॥ ८४ ॥ पहिले जो छः छः सूत्र कहे उनका वंशभी कहते हैं औ वास्तु-विभागके लिये जो पूर्वापर औ दक्षिणोत्तर दश २ रेखा करी है उनको शिर कहते हैं वास्तुमें एकपदका विस्तार जितने हाथ

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होय उतने अंगुल एक वंशका विस्तार होता है औ वंशके विस्तारसे ड्योढा शिराका विस्तार कहा है ॥ ८५ ॥

सुखमिच्छन्ब्रह्माणं यत्नाद्रक्षेद्गृही गृहान्तस्थम् ॥
उच्छिष्टाद्युपघाताद्गृहपतिरुपतप्यते तस्मिन् ॥ ८६ ॥
दक्षिणभुजेनहीने वास्तुनरेऽर्थक्षयोऽङ्गनादोषाः ॥
वामेऽर्थधान्यहानिः शिरसि गुणैर्हीयते सर्वैः ॥ ८७ ॥
स्त्रीदोषाः सुतमरणं प्रेष्यत्वं चापि चरणवैकल्ये ॥
अविकलपुरुषे वसतां मानार्थयुतानि सौख्यानि ॥८८॥

अर्थ—घरका स्वामी सुख चाहे तो वास्तुके मध्यमें स्थित ब्रह्माकी यत्नसे रक्षाकरे ब्रह्माके ऊपर उच्छिष्ट आदि डालनेसे घरके स्वामीको क्लेश होता है ॥ ८६ ॥ वास्तुपुरुषकी दहिनी भुजा हीन होय तो धनका नाश और स्त्रीदोष होते हैं. वामभुजाहीन होय तो धन और अन्नकी हानि होती है. वास्तुपुरुष शिरसे हीन होयतो धन आरोग्य आदि सब गणोंका नाश होता है ॥ ८७ ॥ वास्तुपुरुष चरणहीन होय तो स्त्रीदोष पुत्रमरण और दासत्व होता है. वास्तुपुरुषके सब अंग पूरेहोय उस वास्तुमें रहनेवालोंको मान औ धन करके युक्त सुख होते हैं ॥ ८८ ॥

गृहनगरग्रामेषुच सर्वत्रैवं प्रतिष्ठितादेवाः ॥
तेषु च यथानुरूपं वर्णा विप्रादयो वास्याः ॥ ८९ ॥
वासगृहाणिच विद्याद्विप्रादीनामुदग्दिगाद्यानि ॥
विशतां यथास्वभवनं भवन्ति तान्येव दक्षिणतः॥९०॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवगुणसूत्रविभक्तान्यष्टगुणेनाथ वा चतुःषष्टे ॥
द्वाराणि यानितेषामनलादीनां फलोपनयः ॥ ९१ ॥
अनलभयं स्त्रीजन्म प्रभूतधनता नरेन्द्रवाल्लभ्यम् ॥
क्रोधपरतानृतत्वं क्रौर्यं चौर्य्यं च पूर्वेण ॥ ९२ ॥

अर्थ—घर नगर और ग्रामोंमें भी इसीप्रकार ये वास्तुदेवता स्थित होरहेहैं उन नगर, ग्राम आदिमें ब्राह्मण आदि वर्णोंको यथाक्रम बसावै ॥ ८९ ॥ उत्तर, पूर्व, दक्षिण औ पश्चिम इन-चार दिशाओंमें क्रमसे चतुःशाल घरमें ग्राममें अथवा नगरमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य औ शूद्र बसैं ये घर ऐसें बनावे कि अपने घरके आंगनमें प्रवेश करनेके समय अपने निवासके घर दहिनी ओर पडे ॥ ९० ॥ इकासी पदके वास्तुमें नौ गुणे सूत्र करके और चौसठ पदके वास्तुमें आठगुणे सूत्र करके विभक्त कियेहुये जो अनलआदि बतीस द्वार उनका क्रमसे फल कहतेहैं ॥ ९१॥ शिखिसे लेकर अन्तरिक्षपर्य्यंत जो आठदेवता वास्तुपुरुषके पूर्व-भागमें स्थितहैं उनपर द्वार होय तो क्रमसे अग्निभय, कन्याजन्म, बहुतधन, राजाकी प्रीति, क्रोधीपना, असत्य बोलना, क्रूरपना और चोरपना ये फल होतेहैं ॥ ९२ ॥

अल्पसुतत्वं प्रैष्यं नीचत्वं भक्ष्यपानसुतवृद्धिः ॥
रौद्रं कृतघ्नमधनं सुतवीर्यघ्नंच याम्येन ॥ ९३ ॥
सुतपीडारिपुवृद्धिर्न धनसुताप्तिः सुतार्थबलसंपत् ॥
धनसंपन्नृपतिभयं धनक्षयो रोग इत्यपरे ॥ ९४ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वधबन्धौ रिपुवृद्धिः सुतधनलाभः समस्तगुणसंपत् ॥
पुत्रधनाप्तिर्वैरं सुतेन दोषाः स्त्रियानैःस्वम् ॥ ९५ ॥

अर्थ--अनिलसे लेकर मृगपर्यंत दक्षिणके आठदेवताओंके पदमें द्वारका क्रमसे अल्पपुत्रता, दोषता, नीचता, भोजन, पान और पुत्रोंकी वृद्धि, रौद्र, कृतघ्न, धनहीन, पुत्रबलका नाशक ये फल हैं ॥ ९३ ॥ पितासे लेकर पापतक पश्चिम आठदेवताओं-पर द्वार रखनेका क्रमसे पुत्रपीडा, शत्रुवृद्धि, धन और पुत्रोंकी नहीं प्राप्ति पुत्र धन और बलकी प्राप्ति, धनसंपत्ति, राजभय, धनक्षय औ रोग ये फलहैं ॥ ९४ ॥ यक्ष्मरोगसे लेकर दितिपर्य्यन्त उत्तरके आठदेवताओंपर द्वार रखनेसे क्रमकरके मृत्यु और बंधन शत्रु-वृद्धि पुत्र और लाभ सब गणोंकी सम्पत्ति पुत्र और धनकी प्राप्ति पुत्र के साथ वैर स्त्रीदोन और निर्धनता ये फल होतेहैं ॥ ९५ ॥

मार्गतरुकोणरूपस्तम्भभ्रमविद्धमशुभदं द्वारम् ॥
उच्छ्रायाद् द्विगुणमितांत्यक्त्वा भूमिं न दोषाय॥९६॥
रथ्याविद्धं द्वारं नाशाय कुमारदोषदं तरुणा ॥
पङ्कद्वारे शोको व्ययोऽम्बुनिःस्राविणि प्रोक्तः ॥ ९७ ॥
कूपे नापस्मारो भवति विनाशश्च देवताविद्धे ॥
स्तम्भेन स्त्रीदोषाः कुलनाशो ब्रह्मणोभिमुखे ॥ ९८ ॥

अर्थ—मार्गवृक्ष किसी दूसरे घरकी खूंट, कुआं, खम्भा, भ्रम अर्थात् जलनिकलनेकी मोरी इन करके विद्ध द्वार अशुभ होता है अर्थात् घरके द्वारके सम्मुख ये न होने चाहिये; परन्तु घरके

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वारकी जितनी उंचाई होय उससे दूनी भूमि छोडकर जो इनमें किसीका वेध होय तो कुछ दोष नहीं ॥ ९६ ॥ घरके द्वारके मार्गका वेध होय तोघरके स्वामीका नाश,वृक्षका वेध होय तो बालकोंको दोष, पंक अर्थात् कीचडका वेध होय तो अर्थात् घरके सम्मुख सदा पंक बना रहे तो शोक होता है मोरीका वेध होय तो धनका व्यय होय ॥ ९७ ॥ कूपका वेध होय तो अपस्मार अर्थात् मृगीरोग, देवताकी मूर्त्तिका वेध होय तो घरके स्वामीका नाश,स्तम्भका वेध होय तो स्त्रियोंके दोष और ब्रह्माके सम्मुख द्वार होय तो कुलका नाश होता है ॥ ९८ ॥

उन्मादः स्वयमुद्धरितेऽथ पिहितेस्वयं कुलविनाशः ॥
मानाधिके नृपभयं दस्युभयं व्यसनदं नीचम् ॥ ९९ ॥
द्वारं द्वारस्योपरि यत्तन्न शिवाय संकटंयच्च ॥
आख्यातं क्षुद्भयदं कुब्जं कुलनाशनं भवति ॥ १०० ॥
पीडाकरमतिपीडितमन्तर्विनतं भवेदभावाय ॥
बाह्यविनते प्रवासो दिग्भ्रान्ते दस्युभिः पीडा ॥ १०१ ॥

अर्थ–जिस घरके द्वारका कपाट विनाखुलेहीं खुलजाय उसमें उन्माद रोग होता है जिसका कपाट आपही बन्द होजाय उसमें कुलनाश होजाता है अपने नियत परिमाणसे द्वार बडा होय तो राजाका भय और छोटा होय तो चोर भय होता है और दुःख देता है ॥ ९९ ॥ ठीक द्वार पर दूसरे खंडका द्वार आवे वह शुभ नहीं होता और शकडा द्वारभी शुभ नहीं

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत चवडा द्वार क्षुधाका भय करता है और कुबडा द्वार कुलका नाश करनेवाला होता है ॥ १०० ॥ ऊपरके काष्ठसे बहुत दबा हुआ द्वार घरके स्वामीको पीडा करता है भीतरको झुका हुआ गृह स्वामीका मरण करता है बाहिरको झुका होय तो गृहस्वामी विदेशमें रहे और किसी दिशाकी ओर देखता होय तो चोरोंकरके पीडा होती है ॥ १०१ ॥

मूलद्वारं नान्यैर्द्वारैरभिसंदधीत रूपवृद्ध्या ॥
घटफलपत्रप्रमथादिभिश्चतन्मंगलैश्चिनुयात् ॥ १०२ ॥
ऐशान्यादिसुकोणे सुसंस्थिता बाह्यतो गृहस्यैताः ॥
चरकी विदारिनामाथ पूतनाराक्षसी चेति ॥ १०३ ॥
पुरभवनग्रामाणां ये कोणास्तेषु निवसतां दोषाः ॥
श्वपचादयोन्त्यजातास्तेष्वेव विवृद्धिमायांति ॥१०४॥
याम्यादिष्वशुभफला जातास्तरवः प्रदक्षिणेनैते ॥
उदगादिसुप्रशस्ताः प्लक्षवटोदुम्बराश्वत्थाः ॥ १०५ ॥

अर्थ–घरके मुख्य द्वारका स्वरूप और सामान्य द्वारोंके समानही न करे अर्थात् और द्वारोंसे मुख्य द्वारका स्वरूप उत्तम होना चाहिये मुख्य द्वारको कलश फल पत्र शिवजीके गण आदि मंगल दायक रूपोंसे शोभित करे अर्थात् इनके चित्र द्वारपर खुदवावे ॥ १०२ ॥ घरके बाहिर ईशान आदि चारों कोणोंमें क्रमसे चरकी विदारी पूतना और राक्षसी ये चार देवता स्थितहैं ॥ १०३॥ घर ग्राम और नगरके जो चारों कोण उनमें

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वसनेवालोंको अनेक प्रकारके क्लेश होतेहैं । औ उन कोणोंमें जो श्वपच आदि नीच जाति वसैं तो उनकी वृद्धि होतीहै ॥ ॥ १०४ ॥ प्लक्ष अर्थात् पिलखन, बड़, गूलर, पीपल ये चार वृक्ष क्रमसे घरके दक्षिण, पश्चिम, उत्तर और पूर्वमें होय तो अशुभ होतेहैं और उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिममें क्रमसे ये वृक्ष उत्पन्न होय तो शुभहैं ॥ १०५ ॥

आसन्नाःकंटकिनोरिपुभयदाः क्षारिणोर्थनाशाय ॥
फलिनः प्रजाक्षयकरा दारूण्यपि वर्जयेदेषाम् ॥ १०६॥
छिंद्याद्यदिनतरूंस्तांस्तदंतरे पूजितान्वपेदन्यान् ॥
पुन्नागाऽशोकाऽरिष्टवकुलपनसाञ्छमीशालौ ॥१०७॥
शस्तौषधिद्रुमलतामधुरासुगन्धास्निग्धासमानसु-
षिराचमहीनराणाम् ॥ अप्यध्वनिश्रमविनोदमुपा-
गतानांधत्तेश्रियंकिमुतशाश्वतमंदिरेषु ॥ १०८ ॥

अर्थ--घरके समीप खदिर आदि कांटोंवाले वृक्ष होय तो शत्रुभय करतेहैं आक आदि दूधवाले वृक्ष धनका नाश करतेहैं आम्र आदि फलनेवाले वृक्ष संतानका क्षय करतेहैं इन वृक्षोंका काष्ठभी घरमें न लगावे ॥ १०६ ॥ जो घरके समीप ये वृक्ष होय और इनको काटै नहीं तो इनके साथ और शुभवृक्ष लगादेवे नागकेशर अशोक निम्ब बकुल अर्थात् मौलसिरी पनस अर्थात् कटहर शमी अर्थात् जांटी साल ये वृक्ष शुभहैं ॥ १०७॥ उत्तम औषधि वृक्ष औ लताओंकरके युक्त मिठी सुगंधवाली चिकनी

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समान औ छिद्रोंसे रहित ऐसी भूमिमार्गमें चलनेवाले पुरुष जो श्रम दूर करनेके लिये क्षणमात्र उसमें बैठ जावैं उनकोभी लक्ष्मी देतीहै फिर जिनके घरही ऐसी भूमिमें बनेहैं औ वे पुरुष सदा उनमें रहतेहैं उनको लक्ष्मी प्राप्त होना कौन बडी बातहै॥ १०८॥

सचिवालयेर्थनाशोधूर्तगृहे सुतवधः समीपस्थे ॥
उद्वेगोदेवकुले चतुष्पथे भवति चाकीर्तिः ॥ १०९ ॥
चैत्येभयं ग्रहकृतं वल्मीकश्वभ्रसंकुलेविपदः ॥
गर्तायांतु पिपासा कूर्माकारे धनविनाशः ॥ ११० ॥
उदगादिप्लवमिष्टं विप्रादीनां प्रदक्षिणेनैव ॥
विप्रः सर्वत्रवसेदनुवर्णक्षथेष्टमन्येषाम् ॥ १११ ॥

अर्थ–घरके समीप राजाके मंत्रीका घर होय तो धनका नाश होताहै धूर्त्त अर्थात् दूसरोंको ठगनेवालेका घर होय तो पुत्रमरण देवताका मंदिर समीप होय तो उद्वेग अर्थात् चित्त-को खेदरहै चतुष्पथ चौरस्ता समीप होय तो अकीर्ति होय ॥ ॥ १०९ ॥ चैत्य अर्थात् प्रधानवृक्ष घरके समीप होय तो घरके स्वामीको ग्रहोंका भयरहै । सर्पकी बांदी औ गढों करके युक्त भूमि घरके समीप होय तो विपत्ति होय घरके समीप गढा होय तो प्यासका रोग होय और कछुआके समान आकारकी भूमि घरके समीप होय तो घरके स्वामीके धनका नाश होता-है ॥ ११० ॥ उदक्प्लव अर्थात् जिस भूमिका झुकाव उत्तरकी ओर हो वह भूमि ब्राह्मणोंके लिये शुभहै इसीप्रकार पूर्वप्लव

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दक्षिणप्लुव औ पश्चिमप्लुव भूमि क्रमसे क्षत्रिय वैश्य और शूद्रोंके लिये शुभ होतीहै ब्राह्मण सबप्रकारकी भूमिमें वसे उसका चाहे जिस दिशामें प्लवहो और वर्णोंके लिये अनुवर्ण भूमि शुभहै अर्थात् पूर्वप्लुव दक्षिणप्लुव और पश्चिमप्लुव क्षत्रियोंको दक्षिणप्लुव और पश्चिमप्लुव वैश्योंको औ केवल पश्चिमप्लुव शूद्रोंको शुभहै १११॥

गृहमध्ये हस्तमितं खात्वापरिपूरितं पुनः श्वभ्रम् ॥
यद्यूनमनिष्टं तत्समेसमं धन्यमधिकं यत् ॥ ११२ ॥
श्वभ्रमथवाम्बुपूर्णपदशतमित्वागतस्य यदिनोनम् ॥
तद्धन्यं यच्चभवेत्पलानि पास्वाढकं चतुःषष्टिः॥११३॥
आमेवा मृत्पात्रे श्वभ्रस्थे दीपवर्तिरभ्यधिकम् ॥
ज्वलतिदिशि यस्यशस्तासा भूमिस्तस्य वर्णस्य११४॥

अर्थ—घरके बीच एक हाथ चौरा और एक हाथ गहरा खोल गढा खोदै पीछे उसको उसीकी मिट्टीसे भरै जो गढा भरनेमें मिट्टी न्यून हो जाय तो वह घर अशुभ होताहै ठीक ठीक गढाभर जाय तो सम अर्थात् न शुभ और न अशुभ होताहै और जो गढा भरजाय औ मिटी वचभी रहै वह घर सब भांति शुभ होताहै ॥ ११२ ॥ पूर्वोक्तरीतिसे गढा खोदकर उसमें जलभर कर सौ पद (कदम) पर्यंत जाकर लौट आवे इतनेकालमें जो गढेमें जल कछुभी न घटे वह भूमि शुभ होतीहै और जहांकी धूलिसे आढकको भरकर फिर तौलैं और वह धूलि चौसठ पल होय तो वह भूमी शुभहै अन्न मापनेका एक का

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ष्ठका पात्र जिसमें अनुमान चार सेरके लगभग अन्न आताहै उसको आढक कहतेहैं। चालीस मासेका पल होताहै ॥ ११३॥ मिट्टीके कच्चे पात्रमें चार बत्ती डाल उन बत्तियोंमें ब्राह्मण आदि चार वर्णोंकी कल्पनाकर दीपक जलाय गढेमें रक्खे जिस वर्णकी दिशामें बत्ती बहुत कालतक जलतीरहै वह भूमी उस वर्णको शुभहै ॥ ११४ ॥

श्वभ्रे सितं न कुसुमं यस्मिन् प्रम्लायते नु वर्णसमम् ॥
तत्तस्य भवति शुभदं यस्यच यस्मिन् मनोरमते ११५॥
सितरक्तपीतकृष्णा विप्रादीनां प्रशस्यते भूमिः ॥
गन्धश्च भवति यस्या घृतरुधिरान्नाद्यमद्यसमः॥११६॥
कुशयुक्ता शरबहुला दूर्वा काशावृता क्रमेण मही ॥
अनुवर्णं वृद्धिकरी मधुरकषायाम्लकटुका च ॥११७॥

अर्थ--ब्राह्मणआदि वर्णके रंगके समान अर्थात् श्वेत रक्त पीत और कृष्णरंगके चार फूल लेकर गढेमें सायंकालको रक्खै और दूसरे दिन देखे जिस वर्णका फूल न कुम्हलाया होय वह भूमि उस वर्णके लिये शुभहै अथवा जिस भूमिमें अपना मन लगै वह भूमि शुभ है उसमें और कुछ विचार न करै ॥ ११५ ॥ ब्राह्मण आदि चारों वर्णोंके लिये क्रमसे श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्णकी भूमि शुभ है जिस भूमिमें घृत, रुधिर, अन्न आदि और मद्यके समान गंध होय वह ब्राह्मण आदि वर्णोंके लिये क्रमसे शुभहै ॥ ११६॥ जिस भूमिमें कुशा शर दूब और कास बहुत होय वह ब्राह्मण

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदि वर्णोंके लिये क्रमसे शुभहै और जिस भूमिकी मृत्तिका मीठी कसैली खट्टी औ चरपरी होय वह भूमि क्रम करके ब्राह्मण आदि चार वर्णोंके लिये शुभ होतीहै ॥ ११७ ॥

कृष्टां प्ररूढबीजां गोऽध्युषितां ब्राह्मणैः प्रशस्तां च ॥
गत्वामहागृहपतिःकाले सांवत्सरोद्दिष्टे ॥ ११८ ॥
भक्ष्यैर्नानाप्रकारैर्दध्यक्षतसुरभिकुसुमधूपैश्च ॥
दैवतपूजां कृत्वास्थपतीनभ्यर्च्य विप्रांश्च ॥ ११९ ॥
विप्रः स्पृष्ट्वा शीर्षं वक्षश्च क्षत्रियो विशश्चोरू ॥
शूद्रः पादौ स्पृष्ट्वा कुर्याद्रेखां गृहारम्भे ॥ १२० ॥

अर्थ--जिस भूमिमें घर बनाना होय पहिले वह भूमि हलसे जोती जाय फिर उसमें बीज बोयेजाँय वे जब पकचुके उसके अनंतर एक रात्रि उस भूमिमें गौ बैठें और ब्राह्मण उस भूमीकी प्रशंसा करैं ऐसी भूमिमें घर बनानेकी इच्छावाला पुरुष ज्योतिषीके बताये मुहूर्तपर जाकर॥ ११८॥ अनेक प्रकारके लड्डू अपूप आदि भक्ष्य दही अक्षत सुगंध युक्त पुष्प और धूप करके क्षेत्रपाल आदि देवताओंका पूजन कर स्थपति अर्थात् मिस्तरीं और ब्राह्मणोंका भी पूजनकर गृहा रंभकी रेखा करै ॥ ११९ ॥ रेखाकरनेके समय ब्राह्मण अपने शिरको क्षत्रिय छातीको वैश्य ऊरूको और शूद्र पैरोंको स्पर्श करके रेखा करै ॥ १२० ॥

अंगुष्ठकेन कुर्यान्मध्यांगुल्याथवा प्रदेशिन्या ॥
कनकमणिरजतमुक्तादधिफलकुसुमाक्षतैश्चशुभम् १२१

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शस्त्रेण शस्त्रमृत्युर्बन्धोलोहेन भस्मनाग्निभयम् ॥
तस्करभयं तृणेनच काष्ठोल्लिखिताच राजभयम्१२२॥
वक्रापादालिखिता शस्त्रभयक्लेशदा विरूपाच ॥
चर्माङ्गारास्थिकृता दन्तेन च कर्तुरशिवाय ॥ १२३ ॥
वैरमपसव्यलिखिता प्रदक्षिणे सम्पदो विनिर्देश्याः ॥
वाचः परुषा निष्ठीवित क्षुतं चाशुभं कथितम्॥१२४॥

अर्थ--गृहारंभमें जो गृहपति अंगुष्ठ मध्यमा प्रदेशिनी अंगुष्ठके समीपकी अंगुली सुवर्ण मणि चांदी मोती दही फल पुष्प अक्षत इनमेंसे किसी करके रेखा करे तो शुभ होताहै॥१२१॥ शस्त्रकरके रेखा करे तो शस्त्रकरकेही गृहस्वामीका मृत्यु होय, लोह करके करे तो बंधन, भस्म करके करे तो अग्निभय, तृण करके करे तो चोरभय और काष्ठकरके गृहारंभमें रेखाकरै तो राजभय होताहै ॥ १२२ ॥ टेढी पैरसे खैंची हुई अथवा बुरे रूपकी रेखा होय तो शत्रुभय और क्लेश देतीहै चर्म कोयला हाड और दांत करके करी हुई रेखा गृहस्वामीको अशुभ करती है ॥ १२३ ॥ अपसव्य अर्थात् जो रेखा दहिनी ओरसे बांई ओरको खैंची जाय वह वैर करतीहै और प्रदक्षिण अर्थात् बांई ओरसे दहीनी ओर रेखा खैंची जाय तो संपत्ति होतीहै गृहारंभके समय कोई कठोर वचन बोले थूकै अथवा छींकै तो अशुभ कहाहै ॥ १२४ ॥

अर्धनिचितं कृतं वा प्रविशन् स्थपतिर्गृहानमितानि ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवलोकयेद्गृहपतिः क्वसंस्थितः स्पृशति किंचांगम् ॥
रविदीप्तोयदि शकुनिस्तस्मिन्काले विरौति परुषरवः ॥
संस्पृष्टांगसमानं तस्मिन्देशेस्थि निर्देश्यम् ॥ १२६ ॥

अर्थ--अधबने अथवा संपूर्ण बने घरमें प्रवेश करता हुआ स्थपति (कारीगर) शुभ अशुभ चिन्ह देखे यह देखेकी घरका स्वामी वास्तुपुरुषके किस अंगपर स्थित है औ अपने किस अंग-को स्पर्श कर रहा है ॥ १२५ ॥ उस समय सूर्यके वश जो दीप्त दिशा उसमें स्थित पक्षी रूखा शब्द बोलता होय तो जिस स्थानपर गृहपति स्थित है वहां नीचे हड्डी गढी है उस अंगकी है जो अंग गृहपतिने उस समय स्पर्शकर रक्खा है यह जानै उदयके समय सूर्य पूर्व दिशामें रहता है फिर दिन रातके आठ प्रहरोंमें क्रमसे एक २ प्रहर आठों दिशाओंमें सूर्य गमन करता है जिस दिशाओंको सूर्य छोडकर आया हो वह दिशा अंगारिणी जिसमें स्थित हो वह दीप्ता जो जिसमें जानेवाला हो वह धूमिता दिशा होती है इन तीनोंको छोड शेष पांच दिशा शान्ता होती हैं १२६

शकुनसमयेथवान्येहस्त्यश्वश्वादयोनुवाशंते ॥
तत्प्रभवमस्थितस्मिंस्तदंगसंभूतमेवेति ॥ १२७ ॥
सूत्रेप्रसर्पमाणे गर्दभरावोस्थिशल्यमाचष्टे ॥
श्वशृगाललंघिते वा सूत्रेशल्यंविनिर्देश्यम् ॥ १२८ ॥
दिशिशांतायांशकुनो मधुरविरावीयदातदावाच्यः ॥
अर्थस्तस्मिन्स्थाने गृहेश्वराधिष्ठितेंऽगेवा ॥ १२९ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ-- अथवा शकुन देखनेके समय दीप्त दिशाकी ओर मुख करके हाथी घोडा कुत्ता आदि जीव शब्द करै तो जहां गृहपति स्थितहै उस स्थानमें उन जीवोंके उसी अंगकी हड्डी जानै जो अंग गृहस्वामीने स्पर्शकर रक्खाहै ॥ १२७ ॥ सूत्र पसारनेके समय गर्द्दभ बोलै तोभी अस्थिशल्य होताहै अर्थात् गृहस्वामी जहां बैठाहो उसके नीचे हड्डी गढी होतीहै. जो सूत्रको श्वान अथवा शृगाल गीदड़ लंघन करजांय तोभी उस स्थानमें शल्य जानै ॥ १२८ ॥ जो उस समय शांत दिशाकी ओर मुख करकें पक्षी मधुर शब्द बोलै तो जहां वह पक्षी बैठाहै उस स्थानमें अथवा घरका स्वामी वास्तु पुरुषके जिस अंगपर बैठाहै उसमें धन कहना चाहिये अर्थात् वहां भूमिमें द्रव्य गडा जानै ॥ १२९ ॥

सूत्रच्छेदेमृत्युः कीलेचावाङ्मुखे महान्रोगः ॥
गृहनाथस्थपतीनांस्मृतिलोपेमृत्युरादेश्यः ॥ १३० ॥
स्कंधाच्च्युते शिरोरुक्कुलोपसर्गोऽपवर्जितेकुम्भे ॥
भग्नेपिचकर्मिवधश्च्युते कराद्गृहपतेर्मृत्युः ॥ १३१ ॥
दक्षिणपूर्वेकोणे कृत्वा पूजांशिलांन्यसेत्प्रथमाम् ॥
शेषाःप्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवं समुत्थाप्याः ॥ १३२ ॥

अर्थ--पसारनेके समय सूत्र टूट जाय तो गृहस्वामीका मृत्यु होताहै गाडनेके समय कीलका मुख नीचेको होजाय तो बडा रोग होय गृहस्वामी और स्थपति (मिस्तरीकी) स्मृति अर्थात्

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्मरणशक्ति जाती रहै तो उनका मृत्यु कहना चाहिये ॥ १३० ॥ जलका कलश लानेके समय कंधेसे गिरजाय तो गृहस्वामीको शिरका रोग होय जो वह कलश गिरकर औंधा होजाय तो गृह स्वामीके कुलको उपद्रव होय फूट जायतो कर्मकर (मजूर) का मृत्यु होय और हाथसे कलश छूट पडै तो गृहस्वामीका मृत्यु होताहै ॥ १३१ ॥ अग्निकोणमें पूजा करके पहिली शिला स्थापन करै पीछे और शिलाभी प्रदक्षिणक्रमसे स्थापन करै इसी भांति स्तंभभी खडे करने चाहिये ॥ १३२ ॥

छत्रस्रगम्बरयुतः कृतधूपविलेपनः समुत्थाप्यः ॥
स्तम्भस्तथैवकार्यो द्वारोच्छ्रायः प्रयत्नेन ॥ १३३ ॥
विहगादिभिरवलीनैराकंपितपतितदुःस्थितैश्च तथा
शक्रध्वजसदृशफलंतदेवतस्मिन्विनिर्दिष्टम् ॥ १३४ ॥
प्रागुत्तरोन्नते धनसुतक्षयः सुतवधश्च दुर्गन्धे ॥
वक्रेबन्धुविनाशो न संति गर्भाश्चदिङ्मूढे ॥ १३५ ॥

अर्थ--स्तम्भको छत्र पुष्पमाला और वस्त्रकरके भूषितकर गंध धूपआदिसे उसका पूजनकर खडाकरे इसीप्रकार द्वार अर्थात् (चौकट) कोभी यत्नपूर्वक खडा करना चाहिये ॥ १३३ ॥ स्तम्भ अथवा द्वारके ऊपर पक्षी आदि बैठे (स्तम्भ) अथवा द्वार खडे करनेके समय कामें गिरजाय अथवा ठीक खड़े न होय तो उनका फल इन्द्रध्वजके फलके समान जाने अर्थात् इन्द्रध्वजाध्यायमें जो शुभ अशुभ फल कहा है वही यहांभी जानै

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ १३४ ॥ जो वास्तु अथवा उत्तर दिशामें ऊंचा होय तो धन और पुत्रोंका क्षय होता है दुर्गन्धयुत वास्तु होय तो पुत्रमरण टेढा वास्तु होय तो बंधुनाश और दिङ्मूढ अर्थात् जिसमें दिग्भाग न जाना जाय ऐसा वास्तु होय तो उसमें रहनेवाली स्त्रियोंको गर्भ न होय ॥ १३५ ॥

इच्छेद्यदि गृहवृद्धिंततः समन्ताद्विवर्धयेत्तुल्यम् ॥
एकोद्देषं दोषः प्रागथवाप्युत्तरे कुर्यात् ॥ १३६ ॥
प्राग्भवति मित्रवैरं मृत्युभयं दक्षिणेन यदि वृद्धिः ॥
अर्थविनाशः पश्चादुदग्विवृद्धौ मनस्तापः ॥ १३७ ॥
ऐशान्यां देवगृहं महानसंचापिकार्यमाग्नेय्याम् ॥
नैर्ऋत्यांभाण्डोपस्करोऽर्थधान्यानि मारुत्याम्॥१३८॥
प्राच्यादिस्थे सलिले सुतहानिः शिखिभयमरिभयंच ॥
स्त्रीकलहः स्त्रीदौष्ट्यं नैःस्व्यं वित्तात्मजविवृद्धिः१३९॥

अर्थ--जो घरकी वृद्धि चाहे तो चारों ओर वास्तुको तुल्य बढावै न्यून अधिक न बढावै जो वास्तुके एक ओर दोष होय अर्थात् बढाना होय तो उसको पूर्व अथवा उत्तरमें बढावै ॥ १३६ ॥ जो वास्तु पूर्वकी ओर बढा होय तो मित्रोंके साथ वैर होय दक्षिणकी ओर बढा होय तो मृत्युका भय पश्चिमको बढै तो धनका नाश और उत्तरकी ओर वास्तु बढा होय तो चित्तसंताप होता है पूर्व और उत्तरमें वास्तु बढनेका दोष थोडा है इसीलिये पहली आर्यामें लिखा है कि बढाना होय

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो पूर्व अथवा उत्तरको बढावै ॥ १३७ ॥ घरके ईशान कोणमें देवतागृह, अग्निकोणमें रसोईका घर, नैर्ऋत्य कोणमें गृहस्थीकी सब सामग्री रखनेका घर और वायुकोणमें धन और अन्नस्थापनका घर बनावै ॥ १३८ ॥ घरसे पूर्व आदि दिशाओंमें जल स्थित होय तो क्रमसे पुत्रमरण,अग्निभय,शत्रुभय, स्त्रियोंमें कलह, स्त्रियोंमें दुःशीलता, निर्धनता, धनवृद्धिः और पुत्रवृद्धि ये फल होते हैं ॥ १३९ ॥

खगनिलयभग्नसंशुष्कदग्धदेवालयश्मशानस्थान् ॥
क्षीरतरुधवविभीतकनिम्बारणिवर्जितांश्छिद्यात् १४०
रात्रौकृतबलिपूजः प्रदक्षिणं छेदयेद्दिवावृक्षम् ॥
धन्यमुदक्प्राक्पतनंन ग्राह्योऽतोऽन्यथा पतितः १४१॥
छेदोयद्यविकारी ततःशुभं दारु तद्गृहोपयिकम् ॥
पीते तु मण्डले निर्दिशेत्तरोर्मध्यगांगोधाम् ॥ १४२ ॥
मंजिष्ठाभे भेको नीले सर्पस्तथाऽरुणे सरठः ॥
मुद्गाभेऽश्मा कपिले तुमूषकोंऽभश्च खड्गाभे ॥ १४३ ॥

अर्थ—पक्षियोंके जिनमें घोंसलेहों,टूटेहुये, सूखे, जलेहुये देव, ताके मंदिरमें अथवा श्मशानस्थित ऐसे वृक्षोंको और जिनमेंसे दूध निकलता हो उनको और धैय,बहेडा नींब औ अरल इन सबको छोड़ और वृक्षोंको घरके लिये काटै अर्थात् इन वृक्षोंका काष्ठ घरमें न लगावे ॥ १४० ॥ रात्रिके समय वृक्षका पूजनकर बलि देकर दिनमें प्रदक्षिणक्रमसे ईशानकोणसे लेकर उस वृक्षको

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काटै जो वृक्ष कटकर उत्तर अथवा पूर्वदिशामें गिरे वह शुभहै जो और दिशामें वृक्ष कटकर गिरे उसको ग्रहण न करे अर्थात् उसका काष्ठ घरमें न लगावे ॥ १४१ ॥ काटनेके समय जिस वृक्षका छेद अर्थात् कटनेका स्थान विकाररहितहोय तो उस वृक्षका काष्ठ घरके लिये शुभ होताहै वृक्षके छेदमें पीले रंगका मंडल देखपडै तो उस वृक्षके मध्यमें गोधा अर्थात् (गोह) रहतीहै यह कहना चाहिये ॥ १४२ ॥ मंजीठके समान लालरंगका मंडल देखपडै तो मेंडक, नीलरंगका मंडल होय तो सर्प, रक्तवर्णका मंडल होय तो सरठ (गिरगिट), मूंगके रंगका अर्थात् हरामंडल देखपडै तो पत्थर, कपिलवर्णका मंडल होय तो मूषक, और वृक्षके छेदमें खड्गके रंगका मंडल देखपडै तो वृक्षके नीचे जलहै यह कहदेवै ॥ १४३ ॥

धान्यगोगुरुहुताशसुराणां न स्वपेदुपरि नाप्यनुवं-
शम् ॥ नोत्तरापरशिरा नचनग्नो नैवचार्द्रचरणः
श्रियमिच्छन् ॥ १४४ ॥ भूरिपुष्पनिकरं सतोरणं
तोयपूर्णकलशोपशोभितम् ॥ धूपगन्धबलिपूजि-
ताऽमरं ब्राह्मणध्वनियुतं विशेद्गृहम् ॥ १४५ ॥

अर्थ–लक्ष्मीकी इच्छावाली पुरुष अन्न,गौ, गुरु, अग्नि और देवता इनके ऊपर न सोवै और रोगाद्वायुं पितृतो हुताशनम् इत्यादि आर्याछंदमें जो पहिले वंशकह आयेहैं उनकी लंबाईके अनुसार शय्या बिछाकरभी शयन नकरै उत्तर अथवा पश्चिमको

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिर करके न सोवै अर्थात् धोती खोलकर नसोवै और जलसे भीगेहुये पैर रखकर नसोवै ॥ १४४ ॥ बहुत पुष्पोंके समूह करके भूषित तोरणकरके युक्त पूर्णकलशों करके शोभित और जिसमें धूप गंध बलि आदिकरके देवताओंका पूजन हुआ होय और ब्राह्मण जिसमें वेदध्वनि कर रहे होय ऐसा जो घर उसमें प्रवेश करै ॥ १४५ ॥

सौम्यायने ज्येष्ठतपोन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृप-
तेर्नवे गृहे ॥ स्याद्वेशनं द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्ष-
लग्नोपचयोदये स्थिरे ॥ १४६ ॥

अर्थ--उत्तरायण सूर्य हो ज्येठ, माघ, फागन, वैशाख ये महीने हो द्वास्थ अर्थात् जिस घरमें प्रवेश करना वांछित हो उसका जिस दिशामें मुखहो उन दिशाके नक्षत्र पूर्व आदि चार दिशाओंमें कहे सात सात कृत्तिका आदि मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी ये नक्षत्र हों जन्मराशि और जन्मलग्नसे तीसरा छठा दशमां ग्यारहवां लग्नहो और वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ ये लग्नहो तब नये घरमें यात्राकी निवृत्ति होनेमें राजाका प्रवेश करना शुभहै ॥ १४६ ॥

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिंच
कारयेत् ॥ त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभैर्लग्नेत्रि-
षष्ठायगतैश्च पापैः ॥ १४७ ॥

अर्थ- मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी,

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा मूल इन नक्षत्रोंमें और पांचमां नवमां लग्न चौथा सातमां दशमां ग्यारहवां दूसरा इन स्थानोंमें शुभ ग्रह हों और तीसरा छठा ग्यारहवां इन स्थानोंमें पापग्रह हो ऐसा लग्नमें वास्तुकी पूजा और भूतबलिको करवावै ॥ १४७ ॥

शुद्धाम्बुरंध्रे विजनुर्भमृत्यौ व्यर्कारिक्ताचरदर्श-
चैत्रे । अग्रेम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वाविशेद्वेश्म
भकूटशुद्धम् ॥ १४८ ॥

अर्थ--चौथा और आठमां स्थान शुद्ध हो अपने जन्मनक्षत्रसे अथवा अपनी जन्मराशिसे अष्टमराशि नहीं हो ऐंतवार मंगलवार चतुर्थी नवमी चतुर्दशी दग्धतिथि मेष कर्क तुला मकर ये लग्न अमावस चैत्र महीना ये सब नहीं हों गृहप्रवेशके समय जलसे पूर्ण कलशा अपने सन्मुख कर ब्राह्मणोंको आगे कर गृहमें प्रवेश करै वर्ण वश्य तारा इन आदिसे नक्षत्र शुद्ध हो ॥ १४८ ॥

कृत्वा शुक्रं पृष्ठतो वामतोर्कंविप्रान्पूज्यान-
ग्रतः पूर्णकुंभम् ॥ रम्यं हर्म्यं तोरणस्रग्वितानैः
स्त्रीभिः स्रग्वी गीतवाद्यैर्विशेत्तत् ॥ १४९ ॥

अर्थ--शुक्रको पीठपै कर सूर्यको वामें कर ब्राह्मण और पूजनीयोंको तथा जलसे पूर्ण कलशको आगे कर सुंदर माला पहन तोरण और बंदरवालोंसे सजाये हुये घरमें स्त्री और गाना बजाना सहित प्रवेश करै ॥ १४९ ॥

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वामो रविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्के पंचमे प्राग्वद-
नादिमन्दिरे ॥ पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभो
नन्दादिके याम्यजलोत्तरानने ॥ १५० ॥

अर्थ--घरका पूर्वको द्वार हो तो प्रवेशका लग्नसे आठमां नवमां दशमां ग्यारहवां और बारहवां इन स्थानोंमें सूर्य हो तब वामार्क जानना दक्षिणको द्वार हो तो प्रवेशका लग्नसे पांचमां छठा सातमां आठमां नवमां इन स्थानोंमें सूर्य हो तब वामार्क जानना पश्चिमको द्वार हो तो प्रवेशका लग्नसे दूसरा तीसरा चौथा पांचमां और छठा इन स्थानोंमें सूर्य हो तब वामार्क जानना उत्तरको द्वार हो तो ग्यारहवां बारहवां लग्न दूसरा तीसरा इन स्थानोंमें सूर्य हो तो वामार्क जानना पूर्वको मुखवाले घरमें पंचमी दशमी पौर्णमासी इन दिनोंमें प्रवेश शुभहै पश्चिमके मुखवाले घरमें प्रवेश करना द्वितीया सप्तमी द्वादशी इन तिथियोंमें शुभ है उत्तरके मुखवाले घरमें तृतीया अष्टमी और त्रयोदशी तिथियोंमें प्रवेश शुभ है ॥ १५० ॥

वक्रेभूरविभात्प्रवेशसमयेकुंभेऽग्निदाहः कृताः
प्राच्यामुद्वसनं कृतायमगता लाभः कृताः पश्चिमे ॥
श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे युगमितागर्भे विनाशो गुदे रामाः
स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कंठे भवेत्सर्वदा ॥ १५१ ॥

इति विश्वकर्मविद्याप्रकाशः ॥ १ ॥

अर्थ—घरके प्रवेशसमयमें वह जिस नक्षत्रपै सूर्य हो उससे

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गिनै कलशाकृति वास्तुके मुखमें १ नक्षत्र है उसमें प्रवेश हो तो घरमें अग्नि लगै पीछे ४ नक्षत्र पूर्वमें हैं उन्होंमें प्रवेश हो तो मनुष्यके वाससे रहित घर रहै पीछे ४ नक्षत्र दक्षिणमें हैं उन्होंमें प्रवेश हो तो द्रव्यकी प्राप्ति हो पीछे ४ नक्षत्र पश्चिममें हैं उन्होंमें प्रवेश हो तो लक्ष्मी मिलतीहै पीछे ४ नक्षत्र उत्तरमें हैं उन्होंमें प्रवेश हो तो कलह अर्थात् लडाई रहै पीछे ४ नक्षत्र गर्भमें हैं उन्होंमें प्रवेशकरे हो तो गर्भका नाशहो पीछे ३ नक्षत्र गुदामें हैं उन्होंमें प्रवेश हो तो बहुत काल पर्य्यंत स्थिति रहै पीछे तीन नक्षत्र कंठमेंहैं उन्होंमें प्रवेश होतो घरके स्वामीकी स्थिरता रहै ॥ १५१ ॥

इति श्रीरोहितकप्रदेशान्तर्गतवेरीग्रामनिवासिगौडवं-
शावतंसविविधशास्त्रपरमपण्डितश्रीशिवसहाय-
पुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितविश्वकर्म-
विद्याप्रकाशभाषाटीका समाप्ता ॥ १ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास.
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI
Acc. No. 1317

CC.O- Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्योतिषग्रंथाः।

२५८	लीलावती सान्वय भाषाटीकाअत्युत्तम	१–८	०–३
२५९	बृहज्जातकसटीक *	१–८	०–४
२६०	बृहज्जातकमहीधरकृतभाषाटीका अत्युत्तम	१–८	०–४
२६१	वर्षदीपकपत्रीमार्ग वर्षजन्मपत्र बनानेका	०–४	०–॥
२६२	मुहूर्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफ् रु. १ ग्लेज्	१–८	०–३
२६३	मुहूर्त्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका	३–०	०–७
२६४	ताजिकनीलकंठीसटीकतंत्रत्रयात्मक	१–४	०–२
२६५	ताजिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधरकृत भा॰टीका अत्युत्तम टैपकी छपी	१–८	०–४
२६६	ज्योतिषसार भाषाटीकासहित	१–०	०–२
२६७	मुहूर्त्तचिंतामणिभाषाटीका महीधरकृत....	१–०	०–३
२६८	मानसागरीपद्धति *..........................	१–४	०–३
२६९	बालबोधज्योतिष............................	०–२	०–॥
२७०	ग्रहलाघव सटीक *	०–१२	०–२
२७१	चमत्कारचिंतामणि भाषाटीका	०–४	०–॥
२७२	जातकालंकारभाषाटीका	०–६	०–॥
२७३	जातकालंकारसटीक.........................	०–६	०–१
२७४	जातकाभरण	०–१२	०–२
२७५	प्रश्नचंडेश्वर भाषाटीका	०–१२	०–१
२७६	लघुपाराशरी भाषाटीका अन्वय सहित	०–३	०–॥
२७७	मुहूर्त्तगणपति *............................	०–१२	०–२
२७८	मुहूर्त्तमार्त्तंड	०–१२	०–२

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास.
" श्रीवेंकटेश्वर " छापाखाना–बंबई.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri